Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 44 • 9 - 15 अगस्त, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 07-08-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

भिक्षु वाणी

समय

जका घड़ी जाए तका,
फिर पाछी नहीं आय।

जो घड़ी चली जाती है, वह लौटकर नहीं आती।

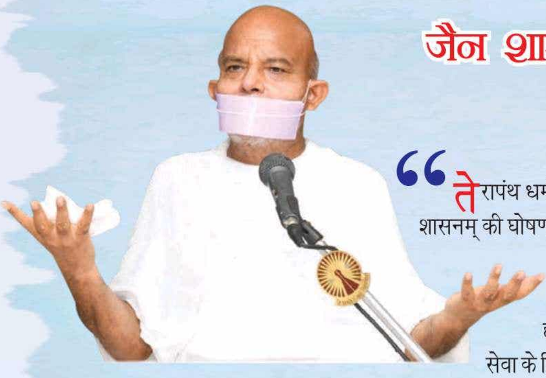

जैन शासन की सेवा के लिए आचार्यप्रवर की महत्त्वपूर्ण उद्घोषणा

जैनम् जयतु शासनम्

"तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने संपूर्ण जैन शासन की सेवा के लिए महत्त्वपूर्ण उपक्रम जैनम् जयतु शासनम् की घोषणा की। आचार्यप्रवर ने भगवान महावीर का स्मरण करते हुए फरमाया कि हम जैन शासन के अंतर्गत साधना कर रहे हैं। जैन शासन में विभिन्न संप्रदाय हैं, हम संपूर्ण जैन शासन की सेवा करें।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि कल्याण परिषद की गोष्ठी में चिंतन किया गया कि जैन धर्म की दृष्टि से क्या कोई उपक्रम या कार्य हाथ में लिया जा सकता है? समुचित चिंतन करने के पश्चात यह निर्णय लिया गया कि किसी माध्यम से नितांत जैन शासन की सेवा के लिए प्रयत्न किया जाना चाहिए। उपक्रम के नामकरण के संदर्भ में चिंतनपूर्वक निर्णय लिया गया और इस उपक्रम का नाम 'जैनम् जयतु शासनम्' घोषित किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि भविष्य में अगर कोई अच्छा सुझाव आए तो नाम में भी परिवर्तन किया जा सकता है। नाम केवल माध्यम है, मूल तो काम है। कार्य की पहचान के लिए नाम की अपेक्षा होती है। अपेक्षा अनुसार इसमें परिवर्तन किया जा सकता है, इसकी विधा में भी परिवर्तन किया जा सकता है परंतु कार्य अच्छा होना चाहिए, जिन शासन की प्रभावना होनी चाहिए। आचार्यप्रवर ने जैनम् जयतु शासनम् के उद्घोष लगवाते हुए भगवान महावीर, तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जी का भी स्मरण किया।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इस उपक्रम के साथ आध्यात्मिक संदर्भ में जैन आचार्य, उपाध्याय व साधु भी जुड़ें। जैन समाज के श्रावक भी इस संगठन की विधा एवं व्यवस्था के अनुसार जुड़ें। इसके विधान में सामायिक रूप से समय अनुसार संशोधन भी किया जा सकता है। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इससे हमें भी लाभ मिले और हमारे द्वारा जिन शासन की सेवा होती रहे तो यह हमारा सौभाग्य होगा और आत्म संतोष की बात होगी। इस उद्घोषणा के समय तेरापंथ धर्मसंघ के संत और धर्मसंघ की विभिन्न केंद्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष-मंत्री उपस्थित रहें। इस घोषणा से संपूर्ण जैन समाज में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई।"

आत्मा के स्वरूप से सामंजस्य की प्रेरणा लें : आचार्यश्री महाश्रमण

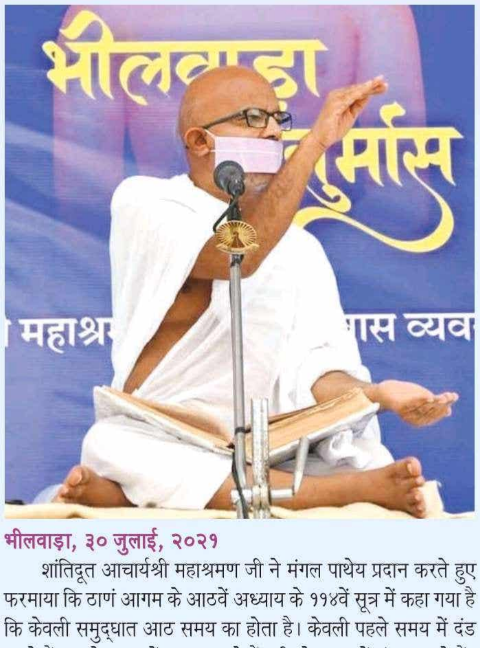

भीलवाड़ा, ३० जुलाई, २०२१

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के आठवें अध्याय के ११४वें सूत्र में कहा गया है कि केवली समुद्घात आठ समय का होता है। केवली पहले समय में दंड करते हैं। दूसरे समय में कपाट करते हैं। तीसरे समय में मंथन करते हैं। चौथे समय में समूचे लोक को भर देते हैं। पाँचवें समय में लोक का-लोक में परिव्याप्त आत्म प्रदेशों का संहरण करते हैं। छठे समय में मंथन का संहरण करते हैं। सातवें समय में कपाट का संहरण करते हैं और आठवें समय दंड का संहरण करते हैं।

हमारा जीवन दो तत्त्वों का योग है। एक है–शरीर और दूसरा है–आत्मा। जीवन ही नहीं ये पूरी सृष्टि दो तत्त्वों वाली है–जीव या अजीव। शरीर के भीतर आत्मा रहती है। कोई-कोई स्थिति ऐसी भी आती है, दुनिया में कि आत्मा के प्रदेश शरीर से बाहर भी निकल जाते हैं।

जैन दर्शन का एक शब्द है–समुद्घात। उसके सात प्रकार हैं। वेदना, कषाय, मरणांत, वैक्रिय, आहारक, तेजस, केवल। शास्त्रकार ने यहाँ एक केवली समुद्घात की चर्चा की है। केवली समुद्घात के द्वारा इस बात को अच्छे तरीके से जाना जा सकता है कि आत्मा के प्रदेश किस रूप में बाहर निकलकर फैलते हैं।

प्रत्येक आत्मा के असंख्य अवयव-प्रदेश होते हैं। असंख्य प्रदेशों का पिंड आत्मा होती है। दो शब्द हैं–प्रदेश और परमाणु। प्रदेश और परमाणु एक समान आकार वाले हैं। परमाणु स्वतंत्र रूप रहता है, प्रदेश जुड़ा हुआ रहता है। आत्म प्रदेश असंख्य है। जितने लोकाकाश के प्रदेश हैं, उतने ही प्रत्येक आत्मा के प्रदेश हैं।

चार चीजों के प्रदेश एक समान हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश और एक जीव। धर्मास्तिकाय के सारे प्रदेश फैले हुए हैं, उसी रूप में रहते हैं। ऐसा नहीं कि कभी संकोच कभी विकोच। अधर्मास्तिकाय के प्रदेश भी अनंत काल से हैं, वैसे पड़े हैं, उनमें कोई संकोच, विकोच फैलाव-सिकुड़न ऐसा नहीं होता है। लोक के असंख्य प्रदेश हैं, वैसे पड़े हैं। परंतु जीव के प्रदेशों की स्थिति भिन्न है। जीव के प्रदेश फैल भी सकते हैं, थोड़े में भी आ सकते हैं।

आत्मा को जितना स्थान मिले, उतने में समाविष्ट हो जाती है। चाहे हाथी हो या कुंथु का शरीर। यह एक प्रसंग से समझाया। राहगीर और दीपक के उदाहरण से समझाया। आत्मा की एक स्वभाविक स्थिति है कि आत्मा बड़े शरीर में फैल सकती है, छोटा शरीर हो तो छोटे में भी फैलाव हो सकता है। पूरी आत्मा कभी-कभी धर्मास्तिकाय की तरह पूरे लोक में फैलती है। वहाँ चार प्रदेश हैं–लोक, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और जीव का प्रदेश है। चारों प्रदेश एक साथ हो जाते हैं।

धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय एक-दूसरे के विरोधी तत्त्व हैं। पर दोनों एक आकाश में साथ रहते हैं। अनंतकाल से रह रहे हैं, रहेंगे। दोनों से प्रेरणा लें कि कैसे विरोधी के साथ सह-अवस्थान हो सकता है।

शास्त्रकार बता रहे हैं कि केवली-समुद्घात क्यों होता है। तीर्थंकरों के तो समुद्घात होता ही नहीं है। हर केवली का समुद्घात हो यह भी जरूरी नहीं है। किसी-किसी के हो सकता है। केवली के चार ही कर्म होते हैं–वेदनीय, आयुष्य, नाम और गौत्र। ये चार अघाति कर्म हैं, इन चार कर्मों से हमें विशेष खतरा नहीं है। हमें खतरा है–घाति कर्मों से, उसमें भी ज्यादा मोहनीय कर्म से है। इतना खतरा है कि जब तक ये चार कर्म रहेंगे, मोक्ष नहीं मिलेगा। जब सिद्धत्व अवस्था प्राप्त होती है, तब चारों ये सिद्धावस्था के प्रथम समय में समागत होते हैं।

प्रथम समय ना सिद्ध च्यार कर्मा नां अंश खपावैरे।
चौथे ठाणे प्रथम उद्देशेः बुद्धिवंत न्याय मिलावै रे।। *चर्चा धारो रे।*

(शेष पृष्ठ २ पर)

तेरापंथ टाइम्स के ई-पोर्टल का लोकार्पण

तेरापंथ धर्मसंघ की हर खबर अब आपके मोबाईल में : Visite : www.terapanthtimes.com

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 अगस्त, 2021

✦ मनुष्य को ऐसा प्रयास करना चाहिए कि हिंसा और अधमता के संस्कार तिरोहित हों और अहिंसा तथा श्रेष्ठता के संस्कार पुष्ट बनें, मानव में मानवता आए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन

ज्ञान केवल सर्टिफिकेट न रहकर व्यवहार में झलके : आचार्यश्री महाश्रमण

नगर सभापति एवं सभी प्रतिनिधियों द्वारा पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र एवं नगर की चाबी पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित।

भीलवाड़ा, २५ जुलाई, २०२१

शांत सौम्य-मूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने दो बातें बताई हैं। एक बात है–ज्ञान और दूसरी बात है दया यानी आचरण।

आदमी के जीवन में सम्यक् ज्ञान, सही ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। उसके साथ या उसके बाद जीवन का आचरण कैसा है, व्यवहार कैसा है, उसका भी बड़ा महत्त्व है। ज्ञान शून्य आचार अपने आपमें अपूर्ण है और आचार शून्य ज्ञान भी अपने आपमें अपूर्ण है। दोनों का महत्त्व है।

विद्यालयों-महाविद्यालयों में ज्ञान दिया जाता है। पर वह ज्ञान कमाई के लिए है। वह एक छोटा लक्ष्य है। जीवन में कैसे शुद्धता रहे, निर्मलता रहे, अच्छा जीवन रहे और आगे भी जीवन के बाद अच्छा रह सके। ये सारी बातें भी ज्ञान से जुड़ें।

शिक्षण संस्थाओं में अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं। उनका भी महत्त्व है। यह लौकिक विद्या है। दूसरी विद्या है–आध्यात्मिक विद्या। शिक्षण संस्थानों में आध्यात्मिक विद्या, जीवन विद्या, आत्म विद्या का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाए। इस ज्ञान का यहाँ भी और आगे के जीवन में भी महत्त्व होता है।

ज्ञान सम्यक् होने से सम्यक् आचार का रास्ता प्रशस्त हो जाता है। पहले ज्ञान हो फिर आचार हो। जाना कहाँ यह मालूम हो तो आगे के मार्ग को देखा जाता है। यह एक दृष्टांत से समझाया। जीवन के हम विभिन्न क्षेत्रों में देखें, ज्ञान है तो आचार ठीक होने की एक प्रशस्त भूमिका बन जाती है।

इसी प्रकार अध्यात्म के क्षेत्र में, नैतिकता के क्षेत्र में पहले इन विषयों का ज्ञान हो तो उन विषयों का आचरण अच्छा हो सकता है। पुस्तकों से ज्ञान मिलता है। भारत में अनेक भाषाओं में अनेक ग्रंथ हैं। भारत के पास एक ज्ञान संपदा ग्रंथों के रूप में है।

भारत के पास संत संपदा है। अतीत में कितने संत हुए हैं। आज भी अपने ढंग से भारत में संत हैं। साधनाशील और ज्ञानी संतों से सन्मार्ग प्राप्त हो सकता है।

पंथ से पथदर्शन, जीवन जीने का अच्छा तरीका मिल जाए। पंथ कलह के निमित्त न बने। पंथों-पंथों में भी सौहार्द रहे। पंथ के उपदेश हमारे जीवन में उतरें। उनका पालन अच्छा हो तो पंथ हमारे कल्याण के निमित्त बन सकते हैं। एक दृष्टांत से समझाया कि ज्ञान सार्टिफिकेट में ही न रहे, वह ज्ञान व्यवहार में आए। तप-संयम, नियमों की पालना है, तो हम उससे आत्मा के पाप रूपी चीते से रक्षा कर सकते हैं।

कोरा पंथ लाइसेंस के समान है। पंथ के द्वारा बताई जाने वाली अच्छी-अच्छी बातों का पालन करें तो हम अपनी सुरक्षा कर सकते हैं। अच्छी बातें हर धर्म के ग्रंथ में मिल सकती हैं। अहिंसा, सच्चाई, सद्भावना, नैतिकता को कौन सा पंथ नहीं मानता। ये बातें हम पंथों से सीखें, अपने जीवन में उतारें।

अपने-अपने पंथ के मुखिया अपने-अपने शिष्यों को अच्छा कर लेंगे तो भारत देश और ज्यादा अच्छा बन सकेगा। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत हमें दिया। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाते हैं, तो पापों से कुछ रक्षा कर सकते हैं। जीवन अच्छा बन सकता है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी प्रेक्षाध्यान की बात बताते थे कि चेतना हमारी शुद्ध रहे। समता का भाव रहे।

भीलवाड़ा चातुर्मास शुरू हो गया है। इस चतुर्मास में ज्ञान की गंगा का प्रवाह बह सके। प्रवचन का उपक्रम ज्ञान देने का उपाय है। पहले ज्ञान सही हो, फिर आचरण भी सही हो जाए तो परिपूर्णता आ सकती है। ज्ञान अंधा है, आचार लंगड़ा है, दोनों एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि गुरु से ही प्रकाश प्राप्त होता है। इसलिए भारतीय संस्कृति में गुरु की महिमा बताई है। जो आदमी गुरु नहीं बनाता, वह संसार में भटकता है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि मन को एकाग्र कैसे करें? मन की चंचलता कैसे दूर करें? मन के तीन कार्य होते हैं–चिंतन, स्मृति और कल्पना। ये तीनों हमारी साधना के बाधक तत्त्व हैं। ये आदमी को चंचल बनाते हैं।

पूज्यप्रवर एवं धवल सेना का नागरिक अभिनंदन

पूज्यप्रवर के अभिनंदन में व्यवस्था समिति अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया, स्वागत अध्यक्ष महेंद्र ओस्तवाल, छत्तीस कोम से अनिल छाजेड़, बोहरा समाज से सब्बीर बोहरा, महावीर सिंह चौधरी, जीतो से आर०एल० नोलखा, ब्राह्मण समाज से गोपाल शर्मा, महेश्वरी समाज से महेश कोठारी, पार्षद मंजु पोखरना, मुस्लिम समाज से रियाज नवाब, शांति भवन से प्रकाश पीपाड़ा, सिक्ख समुदाय से गुरु प्रीतसिंह, बीजेएस से शांतिलाल खीमेसरा, क्षत्रिय समाज से छत्रसिंह मोवस, नगर सभापति राकेश पाठक ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मुनि प्रतीक कुमार जी, मुनि पुलकित कुमार जी के साथ पहले भीलवाड़ा पधार गए थे। अपने भावों की अभिव्यक्ति पूज्य चरणों में अर्पित की।

इस प्रसंग पर पूज्यप्रवर ने फरमाया कि भीलवाड़ा आगमन हुआ है। आज नागरिक अभिनंदन का कार्यक्रम रखा गया है। नगर की ओर से सद्भावना प्रगट हो रही है। विभिन्न वर्गों से जुड़े हुए लोगों ने अपने भाव अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किए। यह संतों के प्रति स्नेह-सम्मान की भावना है। यह जो चाबी है, वो ताला खोलने के लिए होती है। यह एक शांति की चाबी है। अशांति दूर रहे भीलवाड़ा नगर से। हमारे तीन सूत्र हम बताते हैं–सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। इन तीनों को एक प्रकार की चाबी मान लें तो नगर में शांति रह सकती है। तीन सूत्रों के तीन संकल्प समझाए एवं स्वीकार कराए। जन मानस अच्छा रहे, खूब अच्छा कार्य होता रहे। धर्म-अध्यात्म का उद्योत फैलता रहे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि आप लोगों ने एक चाबी दी है। पूज्यप्रवर ने तीन चाबियाँ वापस आपको प्रदान कर दी हैं।

आत्मा के स्वरूप से सामंजस्य की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

केवली के जब वेदनीय कर्म, नाम कर्म और गौत्र कर्म इनकी जो स्थिति है, उससे आयुष्य कर्म की स्थिति कम रह जाती है। चारों में एड्जेस्टमेंट बैठाने के लिए केवली समुद्घात होता है और स्थिति में जो असामंजस्य है, वो खत्म हो करके चारों की स्थिति में सामंजस्य बैठ जाता है। केवली समुद्घात की नहीं जाती है, वो होती है। वो क्रिया स्वाभाविक होती है।

इस समुद्घात में आठ समय लगते हैं। पहले समय में आत्मा दंड की तरह ऊपर-नीचे फैलती है। दूसरे समय में आत्मा कपाट की तरह चौड़ाई में फैल जाती है। तीसरे समय में मंथन की प्रक्रिया होती है, इसमें आत्मा के प्रदेश वात वलय के सिवाय समूचे लोक में फैल जाते हैं। चौथे समय में आत्मा पूरे लोक में फैल जाती है। पाँचवें समय में आत्मा फैले हुए प्रदेशों को संगृहित करती है। फिर छठे में मंथन, सातवें में कपाट और आठवें में दंड को संगृहित कर शरीर में समा जाती है। आठ समय में केवली समुद्घात की प्रक्रिया संपन्न हो जाती है। इस आठ समयों में पहले और आठवें में औदारिक योग, दूसरे छठे, सातवें समय में औदारिक मिश्र योग होता है। तीसरे, चौथे और पाँचवें समय में कार्मण योग होता है।

एक मान्यता यह भी है कि जब जीव का आयुष्य छः महीनों से अधिक रहता है और उसे केवलज्ञान हो जाता है तो उसे निश्चित केवली समुद्घात होती ही है। अनंत केवली बिना समुद्घात के मोक्ष में गए हैं। हम केवली समुद्घात को देखकर एक सामंजस्य बिठाना सीखें। Time Management कैसे बिठाना, इससे समझा जा सकता है।

पूज्यप्रवर ने माणक महिमा का विवेचन करते हुए पूज्य जयाचार्य के जयपुर के लंबे काल का बालक ने कैसे लाभ उठाया, वो समझाया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की एक नवीन कृति 'क्षमा की पराकाष्ठा' को श्रीचरणों में लोकार्पित किया गया। मुख्य नियोजिका जी ने इस ग्रंथ के संदर्भ में विस्तार से समझाया।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में फरमाया कि यह पुस्तक क्षमा की पराकाष्ठा। क्षमा एक उत्तम धर्म है। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी विद्वत व्यक्तित्व के धनी थे। यह आख्यान साहित्य है। यह प्रेरणादायी है। मैं अपनी श्रद्धा अर्पण करता हूँ। जैविभा ज्ञान की खुशबू फैलाने का कार्य कर रही है। यह व्याख्यान में उपयोगी हो, मंगलकामना।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने पूज्यप्रवर को तेरापंथ टाइम्स के ई-पोर्टल को श्रीचरणों में प्रस्तुत किया एवं इसकी विस्तृत जानकारी दी।

"पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यह जो 'तेरापंथ टाइम्स' है, वो भी हमारे संघीय समाचारों का एक सशक्त माध्यम है।"

विज्ञप्ति के बाद में तेरापंथ टाइम्स है। अभातेयुप अपनी शाखाओं के साथ खूब धार्मिक, आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार करती रहे, खूब अच्छा विकास हो।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान तपस्वियों को कराए। सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई।

विजयानंद प्रांत संचालक चित्तौड़गढ़, गोविंद क्षेत्रीय स्वावलंबन तथा प्रांत संगठन मंत्री सेवा भारती चांदनमल सोमानी और रवींद्र ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आरएसएस का चित्तौड़ विशेषांक पूज्यप्रवर को उपरित किया। विजयानंद ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि स्वयं सेवक संघ का विशेषांक है। हम लोग अहिंसा यात्रा करते आ रहे हैं। नागपुर के संघ कार्यालय भी गए थे। सर संघ संचालक हर वर्ष प्रायः आते रहते हैं। आप लोग धार्मिक, नैतिक मूल्यों का विकास करते रहें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में संपत चोरड़िया, संपत सामसुखा, मोहन भंडारी, सुरेंद्र मेहता, मीठालाल गन्ना, शंकर पितलिया, रेणु चोरड़िया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मुख्य नियोजिका जी ने मृगा लोढ़ा के बारे में समझाते हुए कर्मों की विचित्र गति को विस्तार से समझाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सामायिक चारित्र केवल साधु के हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

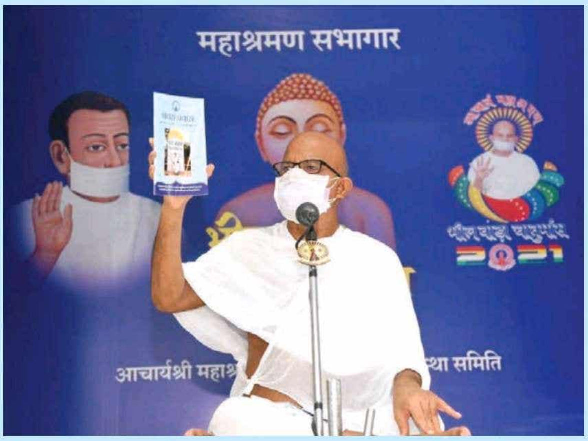

भीलवाड़ा, २७ जुलाई, २०२१

जिन शासन के प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि ठाणं आगम का आठवाँ स्थान है। आठ की संख्या वाली बातें इसमें बताई गई हैं। आठवें स्थान के १०७वें सूत्र में संयम के आठ प्रकार बताए गए हैं।

संयम से तात्पर्य हो जाता है—चारित्र। यह चारित्र पूर्णरूपेण केवल साधु के ही हो सकता है। श्रावक में देश-चारित्र होता है, हो सकता है। सर्व चारित्र साधु के ही हो सकता है। पच्चीस बोल में पच्चीसवाँ बोल हैं—चारित्र पाँच। ये पाँचों चारित्र साधु में ही हो सकते हैं।

श्रावक के सामायिक तो हो सकती है, पर सामायिक चारित्र नहीं हो सकता। उसके कारण हैं कि श्रावक की सामायिक एक मुहूर्त काल की, सामायिक चारित्र में नवीनता होती है। पाँच चारित्र में नवीनता तो हो सकती है। दीक्षा लेते ही सामायिक चारित्र आता है। वह सामायिक चारित्र ७ दिन बाद या ४ मास बाद या छः मास के बाद जो बड़ी दीक्षा होती है, तब उसमें छेदोपस्थापनीय चारित्र आ जाता है।

विकास में तो साधुत्व रह सकता है, पर ऐसा नहीं कि कोई छठे से ह्रास में गुणस्थान की दृष्टि से नीचे आ जाए। गृहस्थ की सामायिक कम काल की है, साधु के सामायिक चारित्र जीवन भर के लिए होते हैं। साधु के सर्व सावद्य योग का त्याग है वो श्रावक के नहीं होता। साधु के सर्वथा तीन करण तीन योग से सावद्य-योग का त्याग होता है। श्रावक के सर्व सावद्य-योग का त्याग नहीं होता।

श्रावक की सामायिक ६ कोटी, ८ कोटी और ९ कोटी की हो सकती है। दो करण तीन योग से त्याग ६ कोटी का त्याग होता है। ८ कोटी में दो कोटी और जुड़ जाती हैं अनुमोदु नहीं वचन से, अनुमोदु नहीं काया से। नौ कोटी में तीन करण, तीन योग से त्याग हो जाता है।

एक मुहूर्त में श्रावक के प्रत्यक्ष रूप में तो त्याग है, पर परोक्ष रूप से उसके सावद्य क्रिया चालु रह सकती है। निर्मल त्याग साधु के ही हो सकता है। इसलिए सामायिक चारित्र साधु के ही हो सकता है। श्रावक के देशव्रती त्याग होता है, सर्व विरति नहीं होती।

आज का जो व्याख्येय है—संयम यानी चारित्र। उसके आठ प्रकार बताए गए हैं—(१) प्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम। चारित्र दो प्रकार का होता है। सराग संयम और वीतराग संयम। छठे गुणस्थान से लेकर दसवें गुणस्थान तक का संयम सराग संयम है। ग्यारहवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान का जो संयम है, वह वीतराग संयम है।

दसवें गुणस्थान में सूक्ष्म संपराय होता है। सूक्ष्म लोभ कषाय का थोड़ा सा अंश विद्यमान रहता है। यह दसवें गुणस्थान के पहले समय का सूक्ष्म संपराय चारित्र के भावों में आता है। वह प्रथम समय का सूक्ष्म संपराय चारित्र होता है। दसवें गुणस्थान के पहले समय बीतने के बाद जो संयम आता है वह दूसरा अप्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम है।

तीसरा प्रकार है—प्रथम समय बादर संपराय सराग संयम। छठे गुणस्थान से नौवें गुणस्थान का जो संयम है, वो बादर संपराय सराग संयम है। इस संयम का जो पहला समय है, वो है प्रथम समय बादर संपराय सराग संयम है। चौथा है—अप्रथम समय बादर संपराय सराग संयम। प्रथम समय के बाद के जो समय है, वो चौथे भेद में आ जाएँगे।

पाँचवाँ प्रकार है—प्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम। ग्यारहवाँ गुणस्थान उपशांत मोह गुणस्थान है। उसका पहला समय यह पाँचवाँ प्रकार है। छठा प्रकार है—अप्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम। यह ग्यारहवें गुणस्थान के पहले समय को छोड़कर शेष समय का होता है।

सातवाँ प्रकार है—प्रथम समय क्षीण कषाय वीतराग संयम। बारहवें, तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान का प्रथम समय यह प्रकार हो जाता है। इनके शेष समय आठवें प्रकार के अप्रथम समय क्षीण कषाय वीतराग संयम है। इसका निष्कर्ष यह निकलता है कि पहला, तीसरा, पाँचवाँ और सातवाँ प्रकार ये तो एक-एक समय वाले संयम के प्रकार हैं। बाकी चार प्रकार अनेक समय वाले संयम के प्रकार हो जाते हैं।

इन आठों में पाँचों चारित्र समाविष्ट किए जा सकते हैं। वीतराग संयम में आयुष्य का बंध ही नहीं होता है। आयुष्य का बंध सराग अवस्था में ही हो सकता है। साधु के छठे और सातवें गुणस्थान में ही आयुष्य का बंध हो सकता है। आयुष्य का बंध की शुरुआत छठे गुणस्थान में ही होती है। सातवें में वह समाप्त हो सकता है।

वीतराग संयम वाले का ग्यारहवें गुणस्थान में आयुष्य पूरा तो भले हो जाए पर बंध नहीं होता। पहले आयुष्य का बंध हो चुका होगा। ये संयम के कई नियम हैं।

पूज्यप्रवर ने माणक-महिमा का वाचन आज शुरू किया।

मुख्य नियोजिका जी ने तत्त्वों के अलग-अलग दर्शनों में स्वीकृत अलग-अलग प्रकार बताए। जैन दर्शन में जगह-जगह तत्त्वों की चर्चा मिलती है। मुख्य नौ तत्त्व बताए गए हैं। तत्त्व वह होता है, जो पारमार्थिक होता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हस्तकला क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२१

ओडिशा।

मुनि जिनेश कुमार जी की प्रेरणा से ओडिशा प्रांतीय जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा हस्तकला क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया। इस कॉन्टेस्ट में प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक संभागियों ने भाग लिया।

संभागियों द्वारा बनाई गई कलाकृतियों को प्रदर्शनी के रूप में सभी के समक्ष तेरापंथ भवन केसिंगा में प्रस्तुत किया गया। सभी कृतियाँ एक से एक बढ़कर बनाई गई थीं। सबसे उत्तम कलाकृति चयनित करने हेतु स्थानीय विद्यालय से प्रधान अध्यापिका एवं सह-अध्यापकों की एक टीम द्वारा मूल्यांकन किया गया।

इस अवसर पर ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा के महामंत्री अनूप कुमार जैन सहित स्थानीय सभा अध्यक्ष मंगतराम जैन, उपाध्यक्ष रामकुमार जैन, नंदकिशोर जैन, अजीत जैन, मयंक जैन, शुभंकर जैन, पवन जैन, प्रिंस जैन, प्रीतम जैन, मुदित जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही।, निर्णायक मंडल को साहित्य भेंट किया गया।

व्यक्ति को प्रयत्न में प्रमाद नहीं करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २६ जुलाई, २०२१

धर्म ज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के आठवें अध्याय के १११वें सूत्र में शास्त्रकार ने ८ बातें बताई हैं। इन आठ बातों में अभ्युत्थान करना चाहिए। प्रयत्न और पराक्रम करना चाहिए और इन आगे वाली ८ बातों में प्रमाद नहीं करना चाहिए। प्रयत्न में प्रमाद नहीं करना चाहिए, जागरूक रहना चाहिए।

वे आठ बातें हैं—पहली बात अश्रुत धर्मों को सम्यक् प्रकार से सुनने के लिए जागरूक रहे। जिन बातों को हमने सुना नहीं है, समझा या जाना नहीं है, उनको सुनने का प्रयास करें। नया कुछ ज्ञान प्राप्त करें। ज्ञान प्राप्ति के लिए दो इंद्रियाँ सशक्त साधना है—श्रोतेन्द्रिय और चक्षुइंद्रिय। जिस आदमी के पास श्रवण व दर्शन शक्ति नहीं है, उसके तो बाह्य साधन अनुपलब्ध होते हैं।

सुनते-सुनते कितना ज्ञान हो सकता है। दूसरी बात—सुने हुए धर्मों के मानसिक ग्रहण और उनकी स्थिर स्मृति के लिए जागरूक रहे। जो ग्रहण किया है, उसको चितारते रहो। सुने हुए को सुरक्षित व अवधारित करने के लिए जागरूक रहे। तीसरी बात—संयम के द्वारा नए कर्मों का निरोध करने के लिए जागरूक रहे। आहार के समय साधु को ज्यादा नहीं बोलना चाहिए। आहार करते समय हँसी-मजाक भी न हो।

चौथी बात—तपस्या के द्वारा पुराने कर्मों का विवेचन-पृथक्करण और विशोधन करने के लिए जागरूक रहें। साधु को जितनी हो सके तपस्या करनी चाहिए। तप के और भी प्रकार हैं। शुभ योग सारा तप है। पाँचवीं बात—असंगृहीत परिजनों-शिष्यों को आश्रय देने के लिए जागरूक रहें। शिष्यों की चित्त समाधि व विकास के प्रति जागरूक रहें।

छठी बात है—शैक्ष-नव-दीक्षित मुनि को आचार-गोचर का सम्यग् बोध कराने के लिए जागरूक रहें। शुरू में अच्छी बातें सीख ली तो जीवन की एक संपत्ति हो जाती है। सातवीं बात—ग्लान की अग्लान भाव से वैयावृत्य करने के लिए जागरूक रहें। बीमार साधु से घृणा न करें, अच्छी सेवा करनी चाहिए। वृद्धों को यथावश्यक साता पहुँचाएँ।

आठवीं बात—साधर्मिकों में परस्पर कलह उत्पन्न हो जाए। तो मध्यस्थ भाव से उसका निपटारा करने का प्रयास हो। सब शांत-सौहार्द भाव से रहें। निष्पक्ष भाव से समाधान करना चाहिए। इन बातों के प्रति जागरूक रहकर प्रयत्न करना चाहिए। इसमें प्रमाद न हो। यह हमारी खुद की आत्मा के लिए भी भला और सामुदायिक जीवन में भी अच्छापन रह सकता है।

परम पावन ने माणक-महिमा के प्रसंगों को समझाते हुए बताया कि लाला लिछमणदास जी मुंबई-सूरत जाते तो अपने व्यापारी मित्रों को सिद्धांतों एवं आचार्य भिक्षु की बातों को गाकर समझाते। लाडनूं में चौथे आरे के साधुओं को देख सकते हो। उन्होंने आनंद भाई जवेरी को लाडनूं जाने का रास्ता व ठिकाना बताया। तेरापंथ का परिचय दिया।

आनंद भाई आदि चार श्रावक लाडनूं पहुँचे और वहाँ का दृश्य देखकर हर्षित हो गए। इतने साधु एक आचार्य की सेवा में है। उन्होंने वहाँ गुरु धारणा व बारह व्रत स्वीकार किए और पुनः वापस मुंबई आ गए। उन्होंने कई श्रावकों को तेरापंथ की धारणा करवाई।

वि०सं० १९२८ का चतुर्मास जयाचार्य का जयपुर था। उसी चतुर्मास में बालक माणक जयाचार्य के संपर्क में आए थे और उनमें वैराग्य भावना जागृत हो जाती है। युवाचार्य मघवा की वाणी सुनकर बालक माणक का वैराग्य का बीज प्रस्फुटित हो रहा है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के पच्चक्खाण करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने अतिमुक्त मुनि की घटना को समझाया। जीवों के अलग-अलग वर्गों के बारे में समझाया।

मुनि पारस कुमार जी ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। मुनि पृथ्वीराज जी के जीवन-प्रसंग बताए।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि तपस्या और सेवा निर्जरा के दो प्रमुख साधन हैं। मुनि पारस जी, मुनि पृथ्वीराज जी के साथ लंबे काल तक रहे। उससे पहले मुनि बुद्धमल जी स्वामी के पास रहे थे। अच्छे ढंग से तपस्या-सेवा, कषाय की मंदता चलती रहे। अच्छा क्रम होता रहे।

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय व अभातेयुप के तत्त्वावधान में एक अगस्त से आयोजित होने वाली जैन विद्या कार्यशाला जो पूज्यप्रवर की कृति 'तीन बातें ज्ञान की' पर आधारित है उसके बैनर का अनावरण हुआ।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि ये तीन बातें ज्ञान की हमारी पुस्तक है, इससे अच्छा ज्ञान का विकास हो। टीपीएफ अच्छा काम करती रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में टीपीएफ से नवीन पारख, कमल दुगड़, भगवती चपलोत, अनिल चोरड़िया, अपेक्षा पामेचा, कवीश आच्छा, अभिनव चोरड़िया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ कठिनाइयाँ तो कहीं भी आ सकती हैं। पर ऐसा मार्ग चुनो, जिससे कठिनाइयों को झेलना लाभदायी बन जाए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

शपथ ग्रहण समारोह

नोखा।

क्रांतिकारी आचार्यश्री भिक्षु का २६६वाँ जन्म दिवस एवं २६४वाँ बोधि दिवस तथा महिला मंडल का शपथ ग्रहण समारोह शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन-वृत्त के बारे में जानकारी दी। तेयुप द्वारा मंगलाचरण हुआ। साध्वी संवेगश्री जी ने श्रद्धांजलि गीतिका प्रस्तुत की। नोखा नगर पालिका उपाध्यक्ष निर्मल भूरा ने नवमनोनीत अध्यक्षा मंजु बैद को अपनी टीम के साथ दायित्व बोध की शपथ दिलाई तथा शुभकामनाएँ दी।

निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम छाजेड़ ने अपने कार्यकाल में सहयोगी रही कैबिनेट, कार्यकारिणी तथा सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। अध्यक्ष मंजु बैद ने कहा कि अनुशासन, विनय और समर्पण हमारे मंडल की विशेष विरासत है। सभा अध्यक्ष हडमान मल ललवानी, मंत्री इंदरचंद बैद, तेयुप अध्यक्ष रूपचंद बैद, मनोज घीया, लाभचंद छाजेड़, मांगीलाल संचेती, पुष्पा देवी पारख, कमला मरोठी, बिंदु देवी लुणावत आदि ने बधाई दी।

साध्वी प्रभातप्रभा जी ने तथा कुसुम छाजेड़ ने संयोजन किया एवं मंत्री प्रीति मरोठी ने आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

नई सोच से आगे बढ़ते रहें

मैसूर।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में नवमनोनीत महिला मंडल का शपथ ग्रहण आयोजित हुआ। पूर्व अध्यक्ष सुधा नौलखा ने नवमनोनीत अध्यक्ष मंजु दक को शपथ दिलाई। नव मनोनीत अध्यक्ष मंजु दक ने मंत्री मंडल की टीम की घोषणा की। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि महिलाएँ अपने दायित्व का निर्वहन करें। नई सोच और आत्मविश्वास के साथ संघीय विकास में सहयोगी बनें। तेरापंथ महिला मंडल संघ की एक उदयीमान और संगठनात्मक संस्था है। मंगल का हर अधिकारी सक्रियता के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर कार्य करें।

कन्याएँ भी अपनी नई सोच और सृजनशील हाथों के विकास के नए आयाम आलेख लिखे। संघीय विकास में हर संस्था योगभूत बने। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है संघ और संघपति के प्रति आस्था बनी रहे। पूर्व अध्यक्ष सुधा नौलखा एवं तेयुप के अध्यक्ष दिनेश दक ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष मंजु दक को शुभकामनाएँ दी। नव निर्वाचित अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन तेममं की ललिता पितलिया ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

ईरोड।

सत्र २०२१-२३ कार्यकाल के लिए मनोनीत अध्यक्ष सुनीता भंडारी एवं मंत्री पिंकी बेदमुथा व उनकी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ चंदा डूंगरवाल ने मंगलाचरण से किया। अध्यक्षा सुनीता भंडारी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया।

चुनाव अधिकारी गिन्नी देवी बाबेल ने नवनिर्वाचित अध्यक्षा को शपथ ग्रहण करवाई। अध्यक्षा सुनीता भंडारी ने अपनी नई कार्यकारिणी टीम की घोषणा की एवं सभी को शपथ दिलाई। अध्यक्षा सुनीता भंडारी, मंत्री पिंकी बेदमुथा एवं पूरी कार्यकारिणी ने मंडल की गति-प्रगति, निष्ठा से उत्तरदायित्व का निर्वहन एवं आध्यात्मिक साधनाओं के प्रति जागरूक रहने के लिए संकल्प लिया।

स्वागत समारोह का आयोजन

दिल्ली।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ चातुर्मासिक प्रवास के लिए विशाल जुलूस गगनभेदी जयनारों के साथ तेरापंथ भवन रोहिणी में पधारी। साध्वीश्री जी ने कहा कि आपने जो हमारा स्वागत किया वह हमारा नहीं अध्यात्म का तेरापंथ धर्मसंघ एवं आचार्यश्री महाश्रमण का है। आप अपने समय का सम्यक् नियोजन करके अत्यधिक लाभान्वित बने।

शासनश्री साध्वी सुव्रता जी, शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी एवं कार्तिकप्रभा जी ने प्रेरक वक्तव्य दिया। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने संघीय भावना को पुष्ट बनाने वाला एक गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया, दिल्ली सभा के महामंत्री डालमचंद बैद, रोहिणी सभा के अध्यक्ष मदनलाल जैन, पश्चिम विहार सभा के अध्यक्ष श्यामलाल जैन, तेयुप, दिल्ली के उपाध्यक्ष संजीव जैन, तेयुप रोहिणी के संयोजक शुभम जैन, दिल्ली सभा के मंत्री सुरेंद्र जैन, तेरापंथी महासभा के सदस्य के०के० जैन, महिला मंडल, दिल्ली की ओर से प्रवीणा सिंघी, अणुव्रत समिति, दिल्ली की ओर से सुशीला रामपुरिया, ज्ञानशाला संयोजिका जयश्री राखेचा, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला की कन्याएँ, अतुल जैन ने साध्वीश्री जी के प्रति मंगलकामना प्रस्तुत की। सुश्रावक नरपत मालू ने भावाभिव्यक्ति दी।

रोहिणी सभा कोषाध्यक्ष पराग जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया। रोहिणी सभा के महामंत्री राजेश बैंगानी ने आगंतुक अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

योगक्षेम

अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

✲ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✲ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✲ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✲ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✲ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✲ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✲ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✲ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✲ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

श्रद्धापूर्वक मनाया गया तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा महोत्सव

चूरू।

तेरापंथ भवन में साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में आषाढ़ी पूर्णिमा के अवसर पर तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया। साध्वीश्री जी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में गुरु के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उपस्थित सभी लोगों ने सम्यक्‌त्व दीक्षा के नियम ग्रहण किए। साध्वीश्री जी ने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु द्वारा आज के दिन तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की गई थी। जो आज एक वटवृक्ष के रूप में सभी को अपनी छाया प्रदान कर रहा है। साध्वी समप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

इस अवसर पर महिला मंडल पूर्वाध्यक्ष मुन्नी डागा, अध्यक्ष मुन्नी कोठारी, उपाध्यक्ष उर्मिला बांठिया, मंत्री रचना कोठारी, कोषाध्यक्ष अनिता पारख, पदमा बांठिया, शशि कोठारी, लक्ष्मी कोठारी, संतोष बैद, शांति बरड़िया, इच्छा देवी संचेती, गुलाब पारख, सुरेंद्र बोथरा सहित गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

रात्रि में साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में धम्म जागरणा का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया तथा श्रावक समाज ने भी गीतिकाओं का संगान कर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम में भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

युवा संबोध शिविर एवं शपथ ग्रहण समारोह

टिटिलागढ़।

तेरापंथ भवन में मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप तथा टीपीएफ के आयोजन में युवा संबोध शिविर का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीतिका के द्वारा मंगलाचरण किया। मुनि परमानंद जी ने कहा कि समस्याओं के अवरोध को दूर करने के लिए धर्म का संबोध चाहिए। जैसे धर्म को युवाओं की जरूरत है, उससे कहीं ज्यादा युवाओं को धर्म की जरूरत है।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन की स्वर्णिम अवस्था है युवा अवस्था। युवा वायु की तरह गतिशील रह सकता है। युवाओं में जोश रहता है, जोश के साथ होश की भी जरूरत है। धर्म के तीन आयाम हैं—अध्यात्म, नैतिकता व उपासना। आत्मा के निकट रहने के लिए सहनशीलता, विनयशीलता व निर्लोभता का होना जरूरी है। कार्यक्रम में महिला तथा शिशु विकास मंत्री टुकुनी साहू व टीपीएफ के पूर्व क्षेत्र के उपाध्यक्ष तुषरा से बिरेंद्र जैन उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में तेयुप, टिटिलागढ़ का शपथ ग्रहण समारोह रखा गया। अभातेयुप के क्षेत्रीय सहयोगी बिरेंद्र ने नवमनोनीत अध्यक्ष आनंद कुमार जैन तथा उनकी टीम को शपथ पाठ कराया तथा उनके आगामी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की। आभार ज्ञापन मंत्री अनंत जैन तथा कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ के अध्यक्ष आशीष जैन ने किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस

बोइनपल्ली।

तेरापंथ स्थापना दिवस पर साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु सत्य के महान खोजी थे। सत्य की खोज के लिए ही उन्होंने बार-बार आगमों का स्वाध्याय किया। वे शास्त्रों में निहित सच्चाई को जीवन में देखना चाहते थे। उस सत्य का दर्शन होने पर उन्होंने नई धर्म क्रांति की। आचार्य भिक्षु ने अनुशासन को संगठन का अनिवार्य पहलु बताया था। जिस पर उन्होंने कहा कि आत्मशुद्धि के लिए अनुशासन जितना जरूरी है, वैसे ही संगठन की दृढ़ता के लिए भी उसका उतना ही मूल्य है।

कार्यक्रम की शुरुआत तेममं, बोइनपल्ली के मंगलाचरण से की गई। विनोद बैद, टीपीएफ के सहमंत्री वीरेंद्र घोषल एवं साध्वी भव्ययशा जी ने अपने विचार अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी स्वस्थप्रभा जी ने किया। सतीश दुगड़ ने आभार ज्ञापन करते हुए साध्वीश्री जी के प्रति प्रमोद भावना प्रकट की।

✦ मधुर बोलना अच्छा है, पर मधुरता के लिए झूठ बोलना अच्छा नहीं है।
– आचार्यश्री महाश्रमण

महासर्वतोभद्र प्रतिमा तप कर मुनि अजित कुमार जी ने तेरापंथ धर्मसंघ में रचा नव कीर्तिमान

चेम्बूर, मुंबई।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अजित कुमार जी ने तेरापंथ धर्मसंघ आचार्यश्री महाश्रमण जी के बरतारे में 'महासर्वतोभद्र प्रतिमा तप' कर तपस्या के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। तपस्या के क्षेत्र में अनेक प्रकार की तपस्या कर धर्मसंघ में अपना नाम तपस्वी संतों की श्रेणी में लिखाया है। मुनिश्री ने बड़ी तपस्याओं में अब तक १ से १५ तक के तपस्या की लड़ी, चार मासखमण, धर्मचक्र तप, कंठी तप, प्रतर तप, सिद्धि तप, लघुसर्वतोभद्र तप संपन्न कर लिए हैं।

परमपूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं आगम मनीषी, बहुश्रुत प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी की निश्रा में १० दिसंबर, २०२० को महासर्वतोभद्र तप मुंबई के एल्फिंस्टन में प्रारंभ किया जो ११ अगस्त, २०२१ को चेम्बूर में संपन्न होगा। इस महासर्वतोभद्र तप में कुल २४५ दिन का समय लगता है, जिसमें १९६ दिन तपस्या एवं ४९ दिन पारणे के होते हैं।

महादानी स्व० मूलचंद सामसुखा एवं महादानी स्व० साध्वी रूपमाला जी के पुत्र मुनि अजित कुमार जी का जन्म असम के बंगाईगाँव में २२ जुलाई, १९६३ को हुआ। मुनि अजित कुमार जी की दीक्षा नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी द्वारा १६ अक्टूबर, १९७८ को गंगाशहर में हुई। दीक्षा से पूर्व मात्र कक्षा ८ तक की पढ़ाई हुई थी परंतु शिक्षा में अपने लगाव के कारण मुनिश्री ने १९९९ में बी०ए० एवं १९९८ में जैन दर्शन में एम०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। वर्तमान में मुनि आगम मनीषी, बहुश्रुत परिषद के संयोजक प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी के सहवर्ती के रूप में चेम्बूर में विराज रहे हैं। मुनिश्री की इस तपस्या में मुनि जम्बूकुमार जी, मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी एवं मुनि सिद्धकुमार जी का भी विशेष सहयोग मिल रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार अध्ययन, आगम, कविता, साहित्य रचना, वक्तृत्व कला, संगीत कला, सुघड़ अक्षर लेखन कला में मुनिश्री की विशेष रुचि रही है।

तेरापंथ धर्मसंघ में आपके परिवार से पाँच सदस्य साध्वी रूपमाला जी (माता), साध्वी अनुशासनाश्री जी (बहन), साध्वी कल्पमाला जी (भतीजी), मुनि श्रेयांस कुमार जी (भाई), मुनि ज्योतिर्मय कुमारजी (भतीजा) दीक्षित हैं।

तप संपन्नता के अद्वितीय अवसर पर संपूर्ण देश भर से चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविका समाज की तरफ से मुनिश्री की इस तपस्या पर शुभकामना संदेश प्राप्त हो रहे हैं।

२६२वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस

राजाराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ भवन में विराजित शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का २६२वाँ तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल ने आचार्य भिक्षु को श्रद्धांजलि में गीत का संगान कर मंगलाचरण किया।

शासनश्री साध्वी जी ने कहा आचार्य भिक्षु जैसी साधना वह सत्य के प्रति समर्पित साधक संत बिरले ही मिलेंगे। जिन्होंने जिस क्षण सत्य को जाना उसी क्षण साधना की स्वीकृति का निर्णय ले लिया। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि जैन इतिहास का यह अभूतपूर्व इतिहास है कि आचार्य भिक्षु ने आगम पारायण व चिंतन, मनन के बाद अपने गुरु के समक्ष सत्य, तत्त्व पर गहन विचार-विमर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सम्यक् दर्शन के बिना सम्यक् चारित्र नहीं। त्याग ही धर्म है, भोग धर्म नहीं। आचार्य भिक्षु ने अहिंसा के यथार्थ रूप को प्रतिष्ठित किया एवं केलवा की अंधेरी ओरी में आज के दिन भाव दीक्षा अपने अन्य १२ साथियों के साथ स्वीकार की।

साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्री जी ने अपने विचार रखे। सभा एवं युवक परिषद के द्वारा सुमधुर गीत संगान के पश्चात तेरापंथ सभा अध्यक्ष मनोज डागा, महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना ने अपने विचार रखे। सभा मंत्री विक्रम मेहर ने कृतज्ञता ज्ञापित की। अनेक भाई-बहनों ने तेले-बेले तप का प्रत्याख्यान किया। संघगान के सामुहिक संगान से समारोह संपन्न हुआ।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

बालोतरा।

साध्वी मंजुयशा जी ने पुराने तेरापंथ भवन से मंगल विहार करके न्यू तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक हेतु मंगल प्रवेश किया। तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमण जी की महती कृपा कर इस वर्ष साध्वी मंजुयशा जी का चातुर्मास बालोतरा फरमाया है। साध्वी मंजुयशा जी ने गुरुइंगित अनुसार तेरापंथ भवन, में चातुर्मास हेतु प्रवेश कर आनंद की अनुभूति करते हुए प्रेरणा दी। साध्वी चिन्मयप्रभा जी और साध्वी इंदुप्रभाजी ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेममं अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल और एकलव्य भंसाली ने मंगल शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल और भंसाली परिवार ने स्वागत गीत के संगान किए। मंत्री गौतम श्रीश्रीमाल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

शपथ ग्रहण समारोह

बीकानेर।

मुनि शांतिकुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप व तेरापंथ किशोर मंडल, गंगाशहर का सत्र २०२१-२२ के लिए व टीपीएफ, बीकानेर का सत्र २०२१-२३ के लिए नवगठित टीम का संयुक्त रूप से शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। नव मनोनीत तेयुप अध्यक्ष विजय छाजेड़ ने तेयुप, गंगाशहर टीम की घोषणा करते हुए सभी पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों के साथ अभातेयुप के कार्यसमिति सदस्य व तेयुप, गंगाशहर के निवर्तमान अध्यक्ष पवन छाजेड़ ने सत्र २०२१-२२ के लिए शपथ ग्रहण की। किशोर मंडल की नव गठित टीम को पवन छाजेड़ ने शपथ दिलाई।

टीपीएफ, बीकानेर के नवमनोनीत अध्यक्ष मिलाप चौपड़ा ने अपनी कार्यसमिति टीम की घोषणा की। उनकी नवगठित टीम को प्रो० डी०सी० जैन ने शपथ दिलाई। पीयूष लुणिया ने बताया कि तेरापंथी सभा, गंगाशहर के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महावीर रांका, तेममं अध्यक्ष ममता रांका, अणुव्रत समिति, गंगाशहर के मनीष बाफना, पूर्व महापौर नारायण चौपड़ा, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष पवन छाजेड़, एड० कन्हैयालाल बोथरा, बच्छराज नाहटा, डॉ० नीलम जैन, तेरापंथी सभा संगठन मंत्री जतनलाल छाजेड़ व अनेक उपस्थित गणमान्य सदस्यों ने नव मनोनीत तेयुप, गंगाशहर एवं टीपीएफ अध्यक्ष, किशोर मंडल संयोजिका कुलदीप छाजेड़ सहित सभी चयनित पदाधिकारियों को शुभकामनाएँ और मंगलकामनाएँ प्रेषित की। साथ ही केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, कोलायत प्रधान पुष्पादेवी सेठिया का बधाई संदेश प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन मोहित संचेती ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

दिल्ली।

सिद्धार्थ-दिव्य जैन, कांकरोली निवासी, दिल्ली करोलबाग प्रवासी की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़, तेयुप मंत्री व संस्कारक सौरभ आंचलिया ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया।

संस्कारक सौरभ आंचलिया तेयुप दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया। तेयुप दिल्ली द्वारा जैन परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

ताराचंद देवेंद्र पुगलिया श्रीडूंगरगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा व संजय संचेती ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया।

तेयुप दिल्ली की तरफ से अभातेयुप सदस्य व संस्कारक संजय संचेती ने आभार ज्ञापित किया। तेयुप, दिल्ली द्वारा पुगलिया परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। संस्कारक विमल गुनेचा ने जैन संस्कार विधि के बारे में बताते हुए त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

नवीन कार्यालय का उद्घाटन

साउथ कोलकाता।

जीतो के नए कार्यालय का उद्घाटन एवं पूजन जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। अभातेयुप के संस्कारक संदीप सिंघी एवं महेंद्र दुगड़ ने पूजन का कार्यक्रम संचालित किया।

परिषद का प्रतिनिधित्व अध्यक्ष अमित पुगलिया एवं सचिव रोहित दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में जीतो कोलकाता के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। जीतो, कोलकाता के अध्यक्ष राजेश भूतोड़िया ने अपनी संस्था के विविध आयामों से सभी को अवगत कराया।

नूतन गृह प्रवेश

वडोदरा।

दाहोदा निवासी, वडोदरा प्रवासी प्रवीण सुराणा के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से अंकलेश्वर से समागत संस्कारक जितेंद्र कोठारी व वडोदरा तेयुप अध्यक्ष पंकज बोल्या, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर हिरण एवं मंत्री हितेश महनोत की उपस्थिति में सपूर्ण कराया गया।

अध्यक्ष एवं निवर्तमान अध्यक्ष ने प्रवीण सुराणा को गृह प्रवेश की शुभकामनाएँ देते हुए मंगलभावना पत्र भेंट किया एवं मंत्री हितेश ने जिनेंद्र एवं प्रवीण का आभार ज्ञापित किया।

नूतन गृह प्रवेश

सरदारगढ़।

सरदारगढ़ निवासी शांतिलाल लोढ़ा के गृह प्रवेश के अवसर पर संस्कारक धनेंद्र कुमार मेहता एवं मनीष कुमार पगारिया ने जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कर विभिन्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए कराया। इस अवसर पर तेरापंथ समाज के पूर्व अध्यक्ष भीकम कोठारी भी उपस्थित रहे।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

उधना।

नांदशा निवासी, सचिन प्रवासी कमलेश मेहता के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक महावीर संचेती एवं मिश्रीमल नंगावत के द्वारा जैन संस्कार विधि से संपादित करवाया गया। कार्यक्रम में सचिन तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष राजमल काल्या, तेयुप पूर्व अध्यक्ष पवन गांधी, तेयुप पूर्व मंत्री भीकम काल्या, महिला मंडल अध्यक्षा शशि कोठारी, महिला मंडल पूर्व मंत्री सोनू मूथा एवं पूर्व अध्यक्ष सीमा मेहता ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कमलेश मेहता ने तेयुप का आभार व्यक्त किया।

✦ व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करे?

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

मूल्यांकन की निष्पत्ति

जैन-साधना-पद्धति, 'प्रेक्षा' नाम नवीन। सांगोपांग सजीव-सी, संचालित स्वाधीन।।
करता जो अन्वेषणा, धर उत्साह अमंद। अनायास मिलता उसे, प्रेक्षा-मधु-मकरंद।।

प्रश्न : आगम-संपादन कार्य के मध्य प्राचीन जैन-तत्त्वों की खोज का दृष्टिकोण निर्मित हुआ। खोज आगे बढ़ी और उसमें आपको जैन आगमों में विकीर्ण ध्यान के मूल्यवान तत्त्व उपलब्ध हो गए। आपने उनका मूल्यांकन किया और विस्तृत ध्यान-परंपरा को पुनः प्रस्थापित कर दिया। वह ध्यान-परंपरा प्राचीन समय में भी 'प्रेक्षा' के नाम से ही पहचानी जाती थी या उसका आपने नया नामकरण कर दिया है?

उत्तर : जिस जैन साधना पद्धति की खोज चल रही थी, जिसके अनुसंधान हेतु तीव्र प्रयत्न हो रहा था, उसके कुछ सूत्र हमें जल्दी उपलब्ध हो गए। उपलब्ध सूत्रों के आधार पर ध्यान के प्रयोग सफल रहे। तब हमें विश्वास हो गया कि यह पद्धति जन-जन के लिए उपयोगी हो सकती है।

नामकरण के संदर्भ में विचार किया जाए तो यह तथ्य स्पष्ट है कि प्राचीन जैन-साधना-पद्धति संवर और निर्जरा इन दोनों में समाविष्ट है। ध्यान का संबंध इन दोनों के साथ है। वह उत्कृष्ट निर्जरा है। संवर ध्यान-योग जैसा आगमिक प्रयोग भी उपलब्ध है। इस दृष्टि से यही नाम आज भी स्वीकृत किया जा सकता था, पर प्रायोगिक नवीनता के साथ अभिधागत नवीनता भी आवश्यक प्रतीत हुई। प्रेक्षा नाम का स्थिरीकरण बहुत सोच-समझकर किया गया है। उसकी पृष्ठभूमि में रहे चिंतन को मैं स्पष्ट कर देता हूँ—

साधना-पद्धति आत्मा के स्वरूप को प्रकट करने के लिए होती है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा का स्वरूप है—अनावृत्त चैतन्य, अप्रतिहत शक्ति और सहज आनंद (वीतरागता)। आत्मा का स्वरूप प्रकट होता है आत्मा के ध्यान से। **संपिक्खए अप्पगमप्पएणं**—आत्मा से आत्मा को देखो, इस साधना-सूत्र में आत्मा का ध्यान करने पर बल दिया गया है। आत्मा का ध्यान उसे जानने और देखने के अतिरिक्त हो भी क्या सकता है? आत्मा का पहला लक्षण है—चैतन्य। चैतन्य ज्ञान-दर्शनात्मक स्थिति है। ज्ञान और दर्शन का अर्थ है—जानना और देखना। जानने और देखने को छोड़कर कोई ध्यान होगा, वह किसी अन्य विषय का ध्यान होगा, आत्मा का नहीं। इस आधार पर इस पद्धति के दो नाम दिए जा सकते थे—विपश्यना और प्रेक्षा। आचारांग में इन दोनों नामों का प्रयोग उपलब्ध है।

बौद्धों में 'विपश्यना' नाम बहुप्रचलित है। इन वर्षों में समय-समय पर विपश्यना शिविर भी समायोजित होते रहे हैं। विपश्यना शब्द एक प्रकार से बौद्ध-साधना पद्धति का वाचक हो गया। इसलिए जैन साधना पद्धति का नाम 'प्रेक्षा' ही उचित लगा। आज यह पद्धति 'प्रेक्षाध्यान पद्धति' के रूप में सुप्रसिद्ध हो चुकी है। इसका मूल स्रोत है—आचारांग। अन्य स्रोतों में दूसरे आगम, आगमों के उत्तरवर्ती ग्रंथ तथा श्रमण भगवान महावीर के बाद ढाई हजार वर्ष की लंबी अवधि में हुए ध्यान के प्रयोग, अनुभव और परिणामों का संकलन है। इन सब स्रोतों को सामने रखकर सर्वांगीण रूप से चिंतन कर इस साधना पद्धति तथा इसके वर्तमान नाम और स्वरूप को मान्यता दी गई है।

प्रश्न : आपने जिस पद्धति का निर्धारण किया है, उसका आधार हमारे आगमों में विकीर्ण प्राचीन तत्त्व ही हैं। ढाई हजार वर्ष के इस लंबे समय में प्राचीन मान्यताओं में काफी परिवर्तन हो रहा है। आज हमें नई वैज्ञानिक दृष्टियाँ भी उपलब्ध हो रही हैं। ऐसी स्थिति में किसी प्राचीन परंपरा का ही अनुसरण करना रूढ़ता नहीं होगी? क्या इसके साथ नए तत्त्वों का सामंजस्य नहीं बिठाया जा सकता?

उत्तर : प्रेक्षाध्यान पद्धति को सांगोपांग बनाने के लिए वर्तमान की वैज्ञानिक दृष्टियों का भी उपयोग किया जा रहा है। किसी भी पद्धति के साथ जब तक वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं जुड़ता है, वह वर्तमान में उतनी उपयोगी नहीं हो सकती। क्योंकि आज का मानव वैज्ञानिक होता जा रहा है। किसी भी तत्त्व को उसकी वैज्ञानिकता के अभाव में स्वीकृति देना कठिन होता जा रहा है। वैसी स्थिति में साधना पद्धति में भी यदि शरीर-शास्त्र और मानव-शास्त्र की खोज का यथेष्ट उपयोग नहीं होता है तो वह पद्धति पुरानी और अवैज्ञानिक प्रमाणिक हो जाती है। यद्यपि पुरानी होना कोई बुरी बात नहीं है, पर कोई भी प्राचीन पद्धति नए तत्त्वों से वंचित क्यों रहे? हमने प्राचीन तत्त्वों के साथ नए तथ्यों और अनुभवों का उपयोग किया है। इसलिए यह पद्धति प्राचीन होते हुए भी अर्वाचीन है। इसमें नई और पुरानी दोनों दृष्टियों का सामंजस्य है।

कुछ लोगों का अभिमत है कि विज्ञान के आगमन से साधना या अध्यात्म का लोप होता जाता है। किंतु हमारी धारणा इससे सर्वथा विपरीत है। हम इस बात में विश्वास करते हैं कि साधना के साथ विज्ञान का योग होने से नए रहस्यों का उद्‌घाटन हो सकता है।

प्रेक्षा का स्वरूप स्थिर करने की दृष्टि से प्राचीन ग्रंथ देखे गए। वहाँ विशिष्ट चैतन्य-केंद्रों का उल्लेख है। उन केंद्रों की संख्या पाँच, सात या नौ बताई गई है किंतु आज के शरीरशास्त्री चैतन्य केंद्रों की संख्या सात सौ तक बताते हैं। इन केंद्रों का परस्पर क्या संबंध है? स्वभाव परिवर्तन की दिशा में ये कहाँ तक सहयोगी हो सकते हैं? आदि तथ्य काफी स्पष्टता से ज्ञात हो सकते हैं और उनका लाभ उठाया जा सकता है। इसी प्रकार ग्रंथि-तंत्र, शारीरिक, विद्युत, शरीर में होने वाले रासायनिक परिवर्तन आदि के संबंध में विज्ञान के द्वारा प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध हो सकती है। दो वर्षों के प्रयोग से यह तथ्य भी प्रमाणित हो गया है कि प्रेक्षा की पद्धति शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों दृष्टियों से लाभप्रद है। प्रेक्षा-पद्धति में किसी प्रकार का आग्रह नहीं है। इसमें प्राचीन तत्त्वों को जितनी सहजता से स्वीकृत किया गया है, उतनी ही सहजता से नवीन तत्त्वों को समाविष्ट किया गया है। इस दृष्टि से यह हमारी स्वोपज्ञ पद्धति है। फिर भी इसमें कल्पना का कोई तत्त्व नहीं है, इसलिए यह हमारी उसी प्राचीन परंपरा की अभिव्यक्ति है, जो नए परिवेश में नई प्रस्तुति दे रही है। भविष्य में संभावित नए-नए प्रयोगों से इसके स्वरूप में विशिष्ट निखार आएगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। **(क्रमशः)**

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(६)

सत्य की पहचान हो तुम
विमल स्वर्ण विहान हो तुम
भीड़ गीतों की गली पर
मौन अनुसंधान हो तुम।।

चिर नवीन प्रवीण हो तुम
एक अनुपम सीन हो तुम
लग रहे रंगीन फिर भी
आत्मलय में लीन हो तुम।।

सहज उजले प्रात हो तुम
सतत ज्योति-प्रपात हो तुम
ताप हरते हर मनुज का
सृजन की सौगात हो तुम।।

नित नए निर्माण हो तुम
इस जगत के त्राण हो तुम
स्वप्न भी हो सत्य भी हो
शास्त्र और पुराण हो तुम।।

मधुर सुमन पराग हो तुम
विपुल विमल विराग हो तुम
त्याग है जीवंत फिर भी
विलक्षण अनुराग हो तुम।।

फूल-सी मुस्कान हो तुम
योगियों के ध्यान हो तुम
हो नए प्रतिमान जग में
नियति भाग्यविधान हो तुम।।

ज्ञान के नव कोष हो तुम
स्वयं में परितोष हो तुम
पोष दोनों को न मिलता
इसलिए निर्दोष हो तुम।।

साधना के धाम हो तुम
सहज ललित ललाम हो तुम
काम की सीमा नहीं पर
पूर्णतः निष्काम हो तुम।।

सरल हो समभाव हो तुम
प्रवर प्रबल प्रभाव हो तुम
जिंदगी के हर सफर में
सहज सतत बहाव हो तुम।।

सुकृत-पारावार हो तुम
सफलता साकार हो तुम
हृदय है अविकार अविचल
शांति के अवतार हो तुम।।

अमल हो अनिकेत हो तुम
सिद्धि के संकेत हो तुम
श्वेत है परिवेश सारा
द्वैत में अद्वैत हो तुम।।

(क्रमशः)

संबोधि

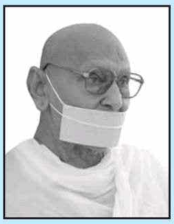

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

क्रिया-अक्रियावाद

(१०) **अणुव्रतानि गृह्णन्ति, गुणशिक्षाव्रतानि च।**
विशिष्टां साधनां कर्तुं, प्रतिमाः श्रावकोचिताः।।

वे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत तथा विशिष्ट साधना करने के लिए श्रावकोचित ग्यारह प्रतिमाओं को स्वीकार करते हैं।

अहिंसा अणुव्रत

गृहस्थ के लिए आरंभज कृषि, वाणिज्य आदि में होने वाली हिंसा से बचना कठिन होता है। गृहस्थ का कुटुम्ब, समाज और राज्य का दायित्व होता है, इसलिए सापराध या विरोध हिंसा से बचना भी उसके लिए कठिन होता है! गृहस्थ को घर आदि चलाने के लिए वध, बंध आदि का सहारा लेना पड़ता है, इसलिए सापेक्ष हिंसा से बचना भी उसके लिए कठिन होता है। वह सामाजिक जीवन के मोह का भार वहन करते हुए केवल संकल्पपूर्वक निरपराध जीवों की निरपेक्ष हिंसा से बचता है, यही उसका अहिंसा अणुव्रत है।

सत्य अणुव्रत

गृहस्थ संपूर्ण असत्य का त्याग करने में असमर्थ होता है परंतु वह ऐसे असत्य का त्याग कर सकता है जिससे किसी निर्दोष प्राणी को बहुत बड़ा संकट का सामना न करना पड़े। यह सत्य अणुव्रत है।

अस्तेय अणुव्रत–

गृहस्थ छोटी-बड़ी सभी प्रकार की चोरी छोड़ने में अपने आपको असमर्थ पाता है। किंतु वह सामान्यतः ऐसी चोरी छोड़ सकता है, जिसके लिए उसे राज्य दंड मिले और लोक निंदा करे। डाका डालना, ताला तोड़ना, लूट-खसोटकर दूसरों के धन का अपहरण करना–ये सब सद्गृहस्थ के लिए वर्जनीय है।

ब्रह्मचर्य अणुव्रत

गृहस्थ पूर्ण ब्रह्मचारी नहीं बन सकता किंतु वह अब्रह्मचर्य के सेवन की सीमा कर सकता है। परस्त्रीगमन, वेश्यागमन आदि अवांछनीय प्रवृत्तियाँ हैं। सद्गृहस्थ इनसे बचकर 'स्वदारसंतोष' व्रत अपना सकता है। वह अपनी परिणीता स्त्री में ही संतुष्ट रहता है तथा अब्रह्मचर्य की मर्यादा करता है। यह ब्रह्मचर्य अणुव्रत है।

अपरिग्रह अणुव्रत

गृहस्थ समस्त परिग्रह त्याग नहीं कर सकता किंतु वह अपनी लालसा को सीमाबद्ध कर सकता है। यही अपरिग्रह अणुव्रत है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वह सब कुछ छोड़कर संन्यासी बन जाए, किंतु इसका प्रतिपाद्य इतना ही है कि वह अतिलालसा में फँसकर अपनी मर्यादाओं को न भूल बैठे। जिसमें लालसा की तीव्रता होती है, वह दोषों से आक्रांत हो जाता है।

गुणव्रत

जो व्रत उपासक की बाह्य-चर्या को संयमित करते हैं, उन्हें गुणव्रत कहा जाता है। वे तीन हैं–

(१) दिग्विरति–पूर्व, पश्चिम आदि सभी दिशाओं का परिमाण निश्चित कर उसके बाहर न जाने का व्रत।

(२) उपभोग-परिभोग परिमाण–अपने उपयोग में आने वाली वस्तुओं का परिमाण करना।

(३) अनर्थदंड विरति-बिना प्रयोजन हिंसा करने का त्याग करना।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-७ :	**सम्यक्त्व की स्थिति कितनी है?**	
उत्तर :	औपशमिक सम्यक्त्व	जघन्य-उत्कृष्ट-अंतर्मुहूर्त
	क्षायिक सम्यक्त्व	सादि-अनंत
	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	जघन्य-एक समय, उत्कृष्ट-साधिक ६६ सागर
	सास्वादन सम्यक्त्व	जघन्य-एक समय, उत्कृष्ट-छह आवलिका
	वेदक सम्यक्त्व	जघन्य-उत्कृष्ट-एक समय

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

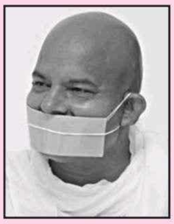

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य सम्भूतविजय

आचार्य सम्भूतविजय भगवान महावीर के छठे पट्टधर थे। बयालीस वर्ष की आयु में उन्होंने संयम स्वीकार किया। आचार्य यशोभद्र के वे सफल उत्तराधिकारी बने। आचार्य यशोभद्र ने सम्भूतविजय और भद्रबाहु दोनों को आचार्य पद पर नियुक्त करके एक नई परंपरा का श्रीगणेश किया था। परंतु भद्रबाहु आचार्य सम्भूतविजय के सामने पूर्ण उपेक्षा भाव लिए रहे। उनके होते हुए वे संघ-संरक्षण से उपरत रहे।

शिष्य-शिष्याओं की संपदा आचार्य सम्भूतविजय की विशाल और सुयोग्य थी। आर्य स्थूलभद्र, स्थूलभद्र का लघु भ्राता श्रीयक तथा स्थूलभद्र की सातों बहनें–(१) यक्षा, (२) यक्षदित्रा, (३) भूता, (४) भूतदिन्ना, (५) सेना, (६) रेणा, (७) वेणा भी उन्हीं के पास दीक्षित हुई थीं। उनकी श्रमण-संपदा विशिष्ट अभिग्रहकारक भी थी। कुएँ के पाल पर, सर्प की बांबी पर, सिंह की गुफा में तथा चिरपरिचिता कोशा के यहाँ चातुर्मास करने वाले मुनिगण उन्हीं के शिष्य थे। गुफा, कुएँ का तट तथा सर्प-बांबी पर साधना करने वाले मुनियों को सम्भूतविजय ने दुष्कर कार्य करने वाले तथा स्थूलभद्र को महादुष्कर कार्य करने वाला बताया। तब गुफावासी मुनि को ईर्ष्या हुई। गुरु-वाक्य का अपमान करता हुआ कोशा के वहाँ गया। कोशा के रूप पर आकृष्ट हो गया और उससे काम-प्रार्थना करने लगा। कोशा कुशल महिला थी। वह व्यक्ति के दुर्बल मन को सबल बनाना जानती थी। कोशा ने कहा–नेपाल देश का राजा प्रथम समागत भिक्षुओं को लक्षमुद्रा मूल्य की रत्नकम्बल दान करता है। वह कम्बल मेरे सामने प्रस्तुत कर सको तो इस विषय में कुछ सोच सकती हूँ। मुनि अपने नियमों को विस्मृत कर चतुर्मास काल में ही और मुनिवेश में ही नेपाल पहुँचे और मार्ग में भीषण कठिनाइयों को झेलकर रत्नकम्बल लेकर पुनः कोशा के पास पहुँचे। कोशा ने उस रत्नकम्बल से अपने पैरों को पोंछा और उसे गंदी नाली में फेंक दिया। मुनि चौंके और बोले–'सुभगे! अति कठिन श्रम से प्राप्त इस बहुमूल्य रत्नकम्बल का आप जैसी समझदार महिला के द्वारा यह उपयोग किया जा रहा है?' मुनि को आश्चर्यचकित देखकर संयम जीवन की महत्ता समझाती हुई कोशा ने कहा–'मुने! इस साधारण-सी कम्बल के लिए इतनी चिंता? क्या आप संयम रत्न रूपी कम्बल को खोकर इससे बड़ी भूल नहीं कर रहे हैं?' मुनि संभल गए। गुरु के पास आत्मालोचन किया और मुनि स्थूलभद्र को साधुवाद दिया।

आर्या यक्षा ने श्रीयक मुनि को पर्वाधिराज का उपवास कराया। उपवास में मुनिवर का स्वर्गवास हो गया। साध्वी को बहुत अनुताप हुआ। उसने अपने आपको दोषी माना। दोषी के रूप में संघ के सामने प्रस्तुत हुई। परंतु संघ ने उसे निर्दोषी घोषित किया। पर साध्वी का मनस्ताप तब मिटा जब शासन-देवी ने उसे श्री सीमंधर स्वामी के पास पहुँचा दिया। प्रभु ने स्पष्ट किया–'श्रीयक मुनि की मृत्यु में तुम्हारा कोई दोष नहीं है।' प्रभु ने साध्वी को चार चूलिकाएँ भी दीं, जिनमें से दो दशवैकालिक के साथ जुड़ी हैं और दो आचारांग के साथ जुड़ी हैं।

आचार्य सम्भूतविजय चतुर्दश पूर्वधारी श्रुतकेवली थे। बयालीस वर्ष वे घर में रहे। चालीस वर्ष तक संयमी जीवन का पालन किया। उनका आचार्य-काल मात्र आठ वर्ष का रहा। वी०नि० १५६ (वि०पू० ३१४) में दिवंगत हुए।

(क्रमशः)

✦ पुण्य के प्रभाव से व्यक्ति को सुमधुर वाणी, शारीरिक स्वास्थ्य, सज्जनता, शालीनता, तीक्ष्ण बुद्धि आदि की प्राप्ति होती है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मास में तेरापंथ की महिमा शतगुणित करें

ग्रीन पार्क, दिल्ली।

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश कल्याण मित्र परिवार के ग्रीन पार्क स्थित गोयल श्रद्धा निवास में हुआ। विहार जूलुस, दिल्ली सभा अध्यक्ष जोधराज के निवास से प्रारंभ होकर चातुर्मासिक स्थल गोयल श्रद्धा निवास पर पहुँचा।

साध्वीश्री जी ने कहा कि ५२ वर्ष के दीक्षित काल में साध्वी विजयश्री जी एवं साध्वी जयप्रभा जी के निर्देश में काम किया व निश्चितता का जीवन जिया। आज गुरुदेव ने जो दायित्व सौंप है वो श्रावक समाज के सहयोग से साकार कर पाएँ, तेरापंथ धर्मसंघ की महिमा को शतगुणित कर सकें यही मंगलकामना करते हैं। साध्वीवृंद ने सामुहिक गीतिका का संगान किया। साध्वी शीतलयशा जी ने मंगल प्रवेश पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

मुख्य अतिथि के रूप में एमसीडी सेंट्रल जोन के चेयरमैन राजपाल सिंह ने अपना वक्तव्य दिया। तेरापंथी समाज के किए हुए कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में प्रमुख उपस्थिति गणमान्य श्रावक कन्हैयालाल जैन पटावरी, महासभा उपाध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली सभा अध्यक्ष जोधराज बैद, दिल्ली सभा महामंत्री डालमचंद बैद, अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन, वरिष्ठ श्रावक संपत नाहटा, गोविद बाफना, सुशील जैन, दक्षिण दिल्ली सभा की उपाध्यक्षा रजनी बाफना आदि की गरिमामय उपस्थिति रही।

फरीदाबाद, नोएडा, गुरुग्राम सभाओं का भी प्रतिनिधित्व रहा। आभार दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष निर्मल कोठारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन हेमा जैन चोरड़िया ने किया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

बोवनपल्ली।

साध्वी मधुस्मिता जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश सतीश दुगड़ के निवास स्थान पर रैली के साथ बोवनपल्ली के प्रतूष्या आर्केड में हुआ। चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि गुरु कृपा से भाग्यनगर की गली-गली में आनंद की वर्षा हो रही है। बोवनपल्ली के घर-घर में खुशियों के फूल खिले हैं। साध्वीश्री ने संपूर्ण चातुर्मास को मंगलमय बनाने के लिए अट्ठम तप करने की बलवती प्रेरणा प्रदान की। साध्वीश्री ने हॉस्पेट से बोवनपल्ली तक पहुँचने में श्रावक समाज एवं सभा-संस्थाओं की जागरूकता, दायित्वशीलता और श्रमनिष्ठा की सराहना की। सहवर्ती साध्वियों के सर्वांगीण विकास की मंगलकामना की।

साध्वी सहजयशा जी ने कहा कि बोवनपल्ली में पाँच रत्न पधारे हैं और यहाँ महाश्रमण मॉल खुल गया है। सभी चातुर्मास में सेवा उपासना करें व खूब धार्मिक लाभ उठाएँ। साध्वी मधुस्मिता जी, साध्वी स्वस्थप्रभाजी, साध्वी भावयशा जी, साध्वी सहजयशा जी व साध्वी मल्लिप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका द्वारा परिषद को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से की गई। सतीश दुगड़ ने सभी साध्वीवृंद का परिचय करवाया। बोवनपल्ली श्रावक समाज से नवीन सुराणा, संपत नौलखा, राकेश धारेवा, गौरव दुगड़, भावना बैंगानी, रीटा सुराणा, सरला भुतोड़िया ने साध्वीवृंद का स्वागत किया। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद से मुकेश सुराणा, तेममं से मंत्री अंजू चोरड़िया, तेयुप से सहमंत्री धीरज लुनावत, टीपीएफ से राष्ट्रीय प्रोजेक्ट चेयरमैन नवीन सुराणा, अणुव्रत समिति से संगठन मंत्री नीरज सुराणा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। प्रशिक्षिकाओं ने गीत के माध्यम से अपने भाव प्रकट किए। साध्वी सहजयशा जी के नातिले परिवार द्वारा गीतिका के माध्यम से स्वागत किया गया। नन्हे से बालक दिवित दुगड़ ने भी अच्छी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन विनोद बैद द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ सहमंत्री विरेंद्र घोषल ने किया।

अध्यात्म साधना का महत्त्वपूर्ण समय है चातुर्मास

चेन्नई।

माधावरम के जैन तेरापंथ नगर की पुण्य धरा पर आज भी पूज्यप्रवर के ऊर्जामय परमाणुओं का अनुभव हो रहा है। माधावरम, चेन्नई का तीर्थस्थल कहा जा सकता है। इस तीर्थ भूमि में हमारा ८१ दिन का प्रवास आरोग्यवरदायी, साताकारी रहा। उपरोक्त विचार मंगल विहार से पूर्व मंगलभावना समारोह में साध्वी अणिमाश्री जी ने कहे। साध्वीश्री जी ने कहा कि श्रावक समाज न केवल यहाँ का, बल्कि संपूर्ण चेन्नई का श्रावक समाज संघनिष्ठ, गुरुनिष्ठ, समर्पित, आज्ञाकारी एवं सेवाभावी है। साधु-साध्वियों के दृष्टि की आराधना करने वाला है। मंगल प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि हमारा मानव जीवन बड़ा दुर्लभ है। जीवन को सुखमय, शांतिमय, आनंदमय बनाने का प्रयास करें। चातुर्मास अध्यात्म साधना का महत्त्वपूर्ण काल है। इस समय का अच्छा सदुपयोग कर जीवन को अध्यात्ममय व आनंदमय बनाएँ।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, निवर्तमान अध्यक्ष विमल चिप्पड़, मुकेश रांका, जतन पुगलिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, गुणवंती खटेड़, जैन तेरापंथ नगर के अध्यक्ष अशोक बोकड़िया, प्रवीण सुराणा, दीपक लोढ़ा, केसर रांका, कुलदीप रांका, रजत तन्मय मरलेचा, खुशी मेड़तवाल ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल, वरिष्ठ बहनों एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री गजेंद्र खांटेड़ एवं द्वितीय चरण का संचालन कविता मेड़तवाल ने किया।

चातुर्मास में अध्यात्म का जागरण हो

विजयनगर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। साध्वीश्री जी का मंगल प्रवेश संभव नाथ जैन मंदिर क्लब रोड से होते हुए तेरापंथ भवन, विजयनगर में हुआ। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि यह मंगल प्रवेश अंतरंग प्रवेश है, धर्म अहिंसा और संयम रूपी आत्म मंगल को सभी श्रावकों को देने का प्रवेश है। हर घर में आध्यात्मिक जागरण का प्रवेश है। कर्म और निर्जरा का प्रवेश है।

साध्वी आस्थाश्री जी एवं साध्वी विज्ञप्रभा जी ने अपनी विशेष प्रस्तुति में सभा को संबोधित करते हुए सभी को छोटे-छोटे तप, जप, आराधना में जुड़ने के लिए प्रेरणा दी। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने पिछले चातुर्मास की जानकारी देते हुए कहा कि चिकमंगलूर-हासन के अनेक क्षेत्रों को स्पर्श कर साध्वीश्री विजनगर में ऐतिहासिक चातुर्मास करने के लिए पधारे हैं। इसी कड़ी में कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया ने किया। सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया।

इसी कड़ी में अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, दिनेश पोकरना, बैंगलुरू सभा के अध्यक्ष सुरेश दक, आर० आर० नगर के सभा अध्यक्ष मनोज डागा, विजयनगर तेयुप के अध्यक्ष पवन मांडोत, महिला मंडल की अध्यक्षा कुसुम डांगी, नव मनोनीत अध्यक्षा प्रेम भंसाली, ज्ञानशाला संयोजिका अभिलाषा डांगी ने अपने-अपने भाव व्यक्त किए। सभा एवं तेयुप की संयुक्त एवं महिला मंडल और कन्या मंडल से स्वागत गीतिका की विशेष प्रस्तुति रही। इस अवसर पर मनोहर बोहरा, अशोक कोठारी, संतोष मालू, देवांग बैद उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन सभा सहमंत्री प्रकाश गांधी ने किया। संचालन मंत्री मंगल कोचर ने किया।

चातुर्मास में अधिकाधिक धर्म लाभ लें

वापी।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी का तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हआ। सभा अध्यक्ष संपतलाल कोठारी व उपाध्यक्ष गुलाब चोपड़ा के नेतृत्व में कार्यक्रम व रैली का आयोजन हुआ। श्रावक समाज की उपस्थिति में रैली के रूप में सानंद प्रवेश संपन्न हुआ।

इस अवसर पर महासभा के प्रतिनिधि उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल बाफना, संगठन मंत्री प्रकाश डागलिया, गुजरात प्रभारी अनिल चंडालिया, क्षेत्रीय प्रभारी मांगीलाल हिरण एवं अन्य विशिष्टजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

मंगलाचरण महिला मंडल की वरिष्ठ सदस्यों ने किया। महिला मंडल की टीम ने स्वागत किया। ज्ञानशाला के बच्चे, कन्या मंडल, किशोर मंडल, नवयुवतियाँ आदि सभी ने सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। मधु झाबक ने रास्ते की सेवा के अपने प्रेरक अनुभव सभी से साझा किए। बाल कलाकार दर्शन भंडारी ने गीत से सबका मन मोह लिया।

साध्वीवृंद ने सभी साध्वियों का परिचय दिया, गीतिका के माध्यम से रास्ते की सेवा करने वाले सभी श्रावकों का नाम लेकर उनका उत्सहवर्धन किया। महिला मंडल अध्यक्ष करुणा वागरेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल झाबक, तेयुप अध्यक्ष कुलदीप कोठारी तथा महासभा के सभी प्रतिनिधियों ने साध्वीवृंद का स्वागत किया।

अंत में साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने उपस्थित जनमेदिनी को प्रेरणा देते हुए कहा कि चातुर्मास में श्रावक समाज इसी तरह सेवा दर्शन का अधिकाधिक लाभ ले।

आध्यात्मिक विकास का क्रम बने

जोधपुर।

साध्वी पुण्यप्रभा जी, साध्वी दर्शनप्रभा जी, साध्वी निर्मलप्रभा जी, साध्वी जिनयशा जी ने वर्ष २०२१ के चातुर्मास के लिए श्रावक समाज के साथ अमरनगर पाल रोड स्थित तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। साध्वीवृंद के स्वागत समारोह कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ।

कार्यक्रम में मंगलाचरण तेममं, जोधपुर द्वारा किया गया। तेयुप, सरदारपुरा ने स्वागत गीत का संगान किया। सरदारपुरा सभाध्यक्ष माणकचंद तातेड़, तेयुप सरदारपुरा मंत्री कैलाश जैन, महिला मंडल से संतोष देवी मेहता व योगिता, तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, महासभा कार्यकारिणी सदस्य मर्यादा कुमार कोठारी, तेरापंथी सभा, जोधपुर के मंत्री महेंद्र सुराणा, वरिष्ठ श्रावक मुकनचंद मेहता, भंवरलाल भंसाली, जगदीश धारीवाल, सोहनराज तातेड़, श्रद्धानिष्ठ श्रावक हनवंतराज मेहता, टीपीएफ जोधपुर के अध्यक्ष बसंत तातेड़ ने स्वागत उद्‌बोधन व स्वागत गीत का संगान किया।

साध्वी दर्शनप्रभा जी, साध्वी निर्मलप्रभा जी, साध्वी जिनयशा जी ने सामुहिक रूप से संगान किया। साध्वी पुण्यप्रभा जी ने कहा कि विविध देशों में भिन्न-भिन्न स्वागत की परंपरा है। भारत देश में स्वागत करने, अभिनंदन करने की अपनी परंपरा है।

श्रावकों के सहयोग से जो कार्य होता है वो विशेष होता है, इस चातुर्मास में श्रावकों का विशिष्ट सहयोग रहे तो आध्यात्मिक विकास का क्रम बन सके। जोधपुर में विशिष्ट श्रावक हुए हैं। सभी आध्यात्मिक विकास का प्रयत्न करें, यही शुभाशंसा। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री महावीर चौपड़ा ने किया।

दुर्लभ होता है संतों का आगमन

सिकंदराबाद।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी का मंगल प्रवेश हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं के मंगलाचरण गीतिका द्वारा हुआ। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि संतों का समागम बहुत ही दुर्लभ है। आज स्वागत है त्याग और वैराग्य का, स्वागत है ऋषि परंपरा का और स्वागत है आचार्यश्री महाश्रमण जी की कृपादृष्टि का।

जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी, महामंत्री मनोज दुगड़, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, तेयुप के अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, अणुव्रत समति के मंत्री अशोक मेड़तवाल, महिला मंडल की नवनिर्वाचित अध्यक्षा अनिता गीड़िया, ज्ञानशाला की तेलंगाना-आंध्र प्रभारी प्रशिक्षिका अंजू बैद, राजमुंद्री से राजेश लोढ़ा, चांदबाई बैद ने साध्वीश्री जी का स्वागत किया।

ज्ञानशाला के बच्चों एवं प्रशिक्षिकाओं द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई। कन्या मंडल ने सुंदर शब्द चित्र से प्रस्तुति दी। साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी मार्दवयशा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा की ओर से लक्ष्मीपत बैद ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद ने किया।

तेयुप के शपथ ग्रहण समारोह के विविध आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता के सत्र २०२१-२२ के नव मनोनीत अध्यक्ष विकास सिंधी व उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सावीश्री जी के उद्‌बोधन के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन लोकेश गोलछा ने किया। तत्पश्चात विजय गीत का संगान धीरज मालू एवं हेमंत बैद ने किया। निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया और नव मनोनीत अध्यक्ष को शुभकामनाएँ प्रेषित की। तत्पश्चात उन्होंने नव मनोनीत अध्यक्ष विकास सिंधी को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

अध्यक्ष विकास सिंधी ने अपने वक्तव्य में पूर्वाध्यक्षों द्वारा किए गए परिषद के विकास को और भी गतिमान करने का संकल्प लिया। नव गठित कार्यकारिणी की घोषणा की। कार्यसमिति सदस्यों को पद और गोपनीयता की शपथ निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा ने दिलाई।

कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय सहमंत्री अनंत वागरेचा, अभातेयुप साथी नरेंद्र छाजेड़, अजय पींचा, पूर्वांचल सभा अध्यक्ष संजय सिंघी, मंत्री प्रवीण पगारिया, सॉल्टलेक सभा अध्यक्ष नगराज बरमेचा, मंत्री विनोद संचेती, पूर्वांचल महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दुगड़, मंत्री श्वेता डाकलिया, टालीगंज परिषद के नव मनोनीत अध्यक्ष अरिहंत घोड़ावत, बेहाला परिषद के नव मनोनीत अध्यक्ष चेतन एवं काफी संख्या में श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

बेहाला-कोलकाता

तेयुप, बेहाला के सत्र २०२१-२२ के नव मनोनीत अध्यक्ष चेतन चोपड़ा ने साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में शपथ ग्रहण की तथा कार्यसमिति के सदस्यों की घोषणा की तथा नवगठित टीम के सभी सदस्यों को शपथ दिलाई गई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय सहमंत्री अनंत वागरेचा भी इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर संपूर्ण नवगठित टीम का उत्साहवर्धन किया। निवर्तमान अध्यक्ष राकेश भूतोड़िया ने युवाओं को आगे बढ़कर धर्मसंघ को आगे बढ़ाने हेतु कार्य करने के लिए उत्साहित किया। शाखा प्रभारी नरेंद्र छाजेड़ ने युवाओं को नए जोश के साथ अभातेयुप के सभी आयामों में जुड़ने के लिए उत्साहित किया। साध्वीश्री जी ने संपूर्ण टीम को पद की लालसा ना रखते हुए एक श्रेष्ठ कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरणा दी। तत्पश्चात साध्वीश्री जी से मंगलपाठ श्रवण किया।

श्रीगंगानगर

तेयुप गंगानगर का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ महामंत्र के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष रोहित जैन एवं पूरी टीम तथा कार्यकारिणी सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष भैरूदान गोलछा, विमल कोटेचा, जोगेंद्र जैन, सुरेंद्र जैन, महिला मंडल अध्यक्षा शशि जैन आदि अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

विजय गीत गायन संतोष दुगड़ तथा पीयूष जैन द्वारा किया गया। पूर्व की बैलेंस शीट दीपक जैन द्वारा सदन के समक्ष रखी गई। अभिषेक जैन द्वारा शनिवार सामायिक संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई। नवगठित कार्यकारिणी, पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं द्वारा समाज सेवा संबंधित गतिविधियों व सेवा कार्यों के लिए सदैव तत्पर रहने का संकल्प लिया गया।

आसींद

तेयुप का सत्र-२०२१-२२ के लिए नवगठित कार्यकारिणी का तेरापंथ भवन में शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। जिसमें अध्यक्ष लक्की बाफना एवं उनकी पूरी टीम एवं कार्यसमिति सदस्यों ने पद एवं गोपनीयता की शपथ ली।

सभा अध्यक्ष तेजमल रांका ने पूरी टीम को बधाई देते हुए शपथ प्रदाता की भूमिका निभाई। इस अवसर पर सभा मंत्री मदनलाल गोखरू, संरक्षक पारसमल ओस्तवाल, कमलेश बाफना, परामर्शक सुशील बाफना, अशोक चोरड़िया, महावीर ओस्तवाल एवं तेयुप व किशोर मंडल के सदस्य उपस्थित थे।

सूरत

तेयुप, सूरत का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन सिटीलाइट में हुआ। मंगलाचरण विजय गीत संगान तेयुप भजन मंडली ने किया। अभातेयुप संगठन मंत्री बारडोली से समागत जयेश मेहता ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश राठौड़ ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष गौतम बाफना को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात अभातेयुप संगठन मंत्री जयेश मेहता ने सभी पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष गौतम बाफना ने अपना वक्तव्य दिया व कार्यकारिणी की घोषणा की।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की युवाशक्ति संघ कार्य के लिए सदैव समर्पित व जागरूक रहती है। साध्वीश्री जी ने युवकों में एक नए जोश का सृजन किया। मंच संचालन मंत्री अभिनंदन गादिया ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

तेयुप का दायित्व बोध ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी द्वारा सामुहिक नमस्कार मंत्र के समुच्चारण एवं तुलसी संगीत सुधा द्वारा विजय गीत से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। अभातेयुप के तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया।

तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष नरेश बांठिया ने दायित्व बोध ग्रहण समारोह में उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत एवं अभिनंदन किया। तेयुप के सत्र-२०२१-२२ के नव मनोनीत अध्यक्ष सुशील भंसाली ने निवर्तमान अध्यक्ष नरेश बांठिया से अध्यक्ष पद की गोपनीयता की शपथ ग्रहण की। तत्पश्चात सुशील भंसाली ने अपने तेयुप के पदाधिकारी, परामर्शकगण एवं कार्यसमिति के सदस्यों की घोषणा एवं संकल्प पत्र भरवाकर शपथ दिलवाई।

इस अवसर पर अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने नई टीम को बधाई देते हुए कहा कि संगठन को मजबूत करने के लिए किसी को जोड़ने की बजाय खुद को जुड़कर कार्य करने से संगठन मजबूत होता है। राजराजेश्वरी नगर, तेरापंथ सभा/ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज डागा, तेममं अध्यक्षा सरोज बैद, नवमनोनीत अध्यक्ष लता बाफना, सुमन पटावरी, उपासिका एवं प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका उर्मिला सुराणा, कंचन छाजेड़ आदि गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी शुभकामनाएँ संप्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष देवेंद्र नाहटा ने किया एवं आभार ज्ञापन मंत्री विकास छाजेड़ ने किया।

> *✦ हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्त्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा-सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है।*
>
> **– आचार्यश्री महाश्रमण**

मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

नोहर

मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम में 'नमस्कार महामंत्र की महिमा' विषय पर बोलते हुए शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने उपस्थित श्रावक-श्रविकाओं, युवकों व बच्चों से कहा–मंत्र शास्त्र बहुत विशाल है। हर मंत्र का अपना अलग-अलग विधान होता है। विधिपूर्वक तन्मय होकर मंत्र का स्मरण किया जाता है तो वह निस्संदेह फल देता है। हर धर्म के अपने मंत्र होते हैं, जो अनुभवी ज्ञानी आचार्यों द्वारा निर्मित होते हैं। जैन ग्रंथों में भी अनेक मंत्रों का उल्लेख मिलता है, उन सभी मंत्रों में नमस्कार महामंत्र एक विशिष्ट व प्रभावशाली मंत्र है। इसकी महिमा बताते हुए आचार्य कहते हैं कि यह महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सभी मंगलों में श्रेष्ठ है।

नमस्कार महामंत्र के चमत्कारों की भी अनेक घटनाएँ हैं जो मंत्र की शक्ति और विशेषता को बताती हैं। मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम है, भारतीय जीवनशैली में अनेक प्रकार के संस्कार समय-समय पर आते रहते हैं। महामंत्र का कवच पहनने के बाद व्यक्ति अपने जीवन में सदा सुरक्षा का अनुभव करता है। शासनश्री ने मंत्र दीक्षा देकर बच्चों को संस्कारी बने रहने के लिए कुछ संकल्प भी करवाए। कार्यक्रम का प्रारंभ परमेष्ठी वंदना व त्रिपदी वंदना से हुआ। आज से बच्चों की ज्ञानशाला का उपक्रम प्रारंभ कर दिया गया। मुनिश्री ने बच्चों को इसमें निरंतर भाग लेने की प्रेरणा दी।

तेयुप के अध्यक्ष नितेश जैन व मंत्री चंद्रेश सिपानी (चीनू) ने बच्चों को मंत्र दीक्षा की किट वितरित की गई। महिला मंडल की अध्यक्षा किरण देवी ने अच्छी प्रस्तुति के लिए बच्चों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसीटीईओ रमेश सिहाग ने की। मुख्य अतिथि पूर्व नगरपालिका चेयरमैन श्रीराम व्यास थे। पंजाब नेशनल बैंक के सहायक कर्मचारी नीरज सिंगला भी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। स्थानीय सभा द्वारा सभी को साहित्य के द्वारा सम्मानित किया गया।

आषाढ़ शुक्ला १३ को भिक्षु बोधि दिवस व जन्म दिवस मनाया गया। मुनिश्री ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अनेक भाई-बहनों ने गीत व भाषण के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। मुनिश्री ने शक्ति जागरण अनुष्ठान का प्रारंभ करके आज के दिन की महत्ता को और अधिक बढ़ा दिया।इस अनुष्ठान में १३५ व्यक्तियों ने मुनिश्री के पास अपना नामांकन करवाया। महामंत्र के बीजाक्षरों पर आधारित ओम०अ०सि०आ०उ०सा० नमः मंत्र १०८ दिन तक ११ माला फेरने का इसमें विधान रखा गया है। इसी के साथ कुछ त्याग-प्रत्याख्यान का पालन संभागीजनों के लिए तय किया हुआ है।

गदग

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में, तेयुप के नेतृत्व में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि मंत्र दीक्षा के उपक्रम का उद्देश्य है–बच्चों को महामंत्र से परिचित कराना और उसके प्रयोग से होने वाले लाभ से अवगत कराना। नमस्कार महामंत्र हमारे जैन धर्म का महामंत्र है। मंत्रों का सरताज है, सुसुप्त शक्तियों का जागरण करने के लिए बहुत उपयोगी है। मंत्र के प्रकंपन से प्राणधारा आदि में नई शक्ति का विकास होता है।

डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने कहा कि वैदिक धर्म में षोडश संस्कार अर्थात्‌ संस्कार नामकरण अन्नप्राशन चूड़ाकरण कर्णवेध आदि माने गए हैं। आचार्यश्री तुलसी ने भी बच्चों को विशेष संस्कार देने के लिए मंत्र दीक्षा को एक संस्कार के रूप में प्रतिष्ठित किया। साध्वी मेरुप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

ज्ञानशाला के संयोजक सुरेश कोठारी, तेयुप अध्यक्ष दिनेश संकलेचा ने अपने विचार रखे। उपासिका सरस्वती बाई कोठारी, उपासिका विमलाबाई कोठारी, शोभा संकलेचा, महिला मंडल मंत्री विजेता भंसाली, संतोष जीरावला, सारिका संकलेचा आदि ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका उपस्थित थे। बच्चों को मंत्र दीक्षा दी गई। तेयुप के मंत्री कमलेश जीरावला ने धन्यवाद ज्ञापन किया। दिनेश संकलेचा व अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी ने बच्चों को प्रोत्साहित किया।

कैसे सफल बने चातुर्मास

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ भवन में जनसमुह को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि चातुर्मास को सफल बनाने के लिए आप अपना लक्ष्य बनाएँ हमको क्या करना है। मैं अपनी ओर से आपको इंगित करती हूँ कि आप आत्मा से परमात्मा की ओर, वासना से उपासना की ओर अहं से अर्हम्‌ की ओर एवं असयंम से संयम की ओर गतिमान बनने का लक्ष्य निर्णित करें।

यह समय आत्म साधना के लिए सर्वोत्कृष्ट समय है। अंत में मर्यादा पत्र का वाचन करते हुए श्रावकों का ही कर्तव्य है एवं साधुओं के क्या नियम हैं। इसकी विस्तृत व्याख्या की एवं मौलिक मर्यादाओं की सुरक्षा के लिए जागरूक रहने की प्रेरणा दी। श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
9 - 15 अगस्त, 2021

✦ संप्रदाय का महत्त्व है, किंतु सत्य का महत्त्व व सम्मान उससे अधिक है। सच्चाई को खोजने का यथोचित प्रयास होना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

सामायिक कार्यशाला का आयोजन

नालासोपारा (मुंबई)।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित समियाए धम्मे कार्यशाला के अंतर्गत तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी की अध्यक्षता में एवं तेयुप मंत्री दिनेश धाकड़ के मार्गदर्शन में और संयोजक मुकेश मेहता एवं सह-संयोजक मोहन कुमठ के संयोजकीय में एक दिवसीय सामायिक कार्यशाला का पूरे समाज को अपने निवास स्थान में एक सामायिक करने का निवेदन किया गया, जिसमें पूरे समाज ने अच्छी जागरूकता का परिचय दिया। जिसमें २६१ से भी अधिक समता की साधना सामायिक की।

अभातेयुप जेटीएन प्रतिनिधि विकास धाकड़ ने सामायिक के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा अध्यक्ष मदन कोठारी, मंत्री लक्ष्मी लाल मेहता, कोषाध्यक्ष नरेंद्र सोलंकी, महिला मंडल संयोजिका दिव्या बाफना, अंजु छाजेड़, नीता कोठारी, किशोर मंडल संयोजक राहुल मेहता, कन्या मंडल से आंचल ढालावत, अंकिता चौहान, निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष पारस बाफना आदि अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्यजनों की सहभागिता रही।

एटीडीसी में ओपीडी सेवा राहत दर पर प्रारंभ

उधना।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर शेल्बी हॉस्पिटल के चार सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टर हरेश कासवाला, डॉ० मनीष सैनी, डॉ० गौरव खंडेलवाल, डॉ० अमोल कोटलवर के ओपीडी का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा करवाया गया। इस संस्कार विधि में संस्कारक मिश्रीमल नंगावत, विकास कोठारी, अरुण चंडालिया, संजय बोथरा, अनिल सिंघवी ने विधिवत संस्कार विधि को संपादित करवाया। संस्कारक मिश्रीमल नंगावत ने उपस्थित सभी डॉक्टर एवं तेयुप टीम को इस मानव सेवा के कार्य का शुभारंभ पर शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं मंगलभावना यंत्र की स्थापना करवाई।

संस्कारक विकास कोठारी ने मंगलभावना यंत्र की विशेषता एवं उपयोगिता के बारे में बताया। इस अवसर पर संस्कार विधि में तेयुप के अध्यक्ष अरुण चंडालिया, मंत्री मनीष दक, उपाध्यक्ष-द्वितीय शैलेश बाफना, सहमंत्री-प्रथम, अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्यजन उपस्थित थे। शेल्बी हॉस्पिटल के जेमीन भाई ने तेयुप के साथ करार कराने में अहम् भूमिका निभाई। तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल बाफना एवं महिला मंडल नवमनोनीत अध्यक्ष जस्सू बाफना ने भी अपने विचार व्यक्त किए। आभार एटीडीसी प्रभारी भगवतीलाल हिरण ने किया।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा एमबीडीडी रक्तदान चतुर्थ कैंप का आयोजन तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में आयोजित किया गया। शहर के एचसीजी हॉस्पिटल के सहयोग से यह उपक्रम किया गया। स्थानीय लोगों एवं जैन समाज से अनेक व्यक्तियों ने सेवा के इस कार्य में रक्तदान किया। कुल १६ यूनिट रक्त का संग्रह किया गया। रक्तदाता एवं एचसीजी ब्लड बैंक के प्रति अनंत आभार व्यक्त किया।

सेवा कार्य : मानव सेवा कार्य के अंतर्गत तेयुप द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के बाहर जरूरतमंदों को भोजन का वितरण किया गया। परिषद द्वारा कुल ५ उपक्रम संपादित किए गए। सभी आयोजन को सफल बनाने में संपूर्ण टीम ने अथक श्रम का नियोजन किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ कोलकाता।

रक्तदान महादान के इस स्वप्न को साकार करते हुए अभातेयुप के तत्त्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेयुप, दक्षिण कोलकाता और खुशियाँ फाउंडेशन ने मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन अहिंसा भवन, चक्रबेरिया, दक्षिण कोलकाता में किया। नमस्कार महामंत्र के संगान से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अभातेयुप से एमबीडीडी राष्ट्रीय सहप्रभारी यशवंत रामपुरिया की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का सफल आयोजन का श्रेय अमित सुराणा को जाता है, जो इस कार्यक्रम के संयोजक भी थे।उनके सहित कुल ४३ व्यक्तियों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। तेयुप के अध्यक्ष, सचिव, पदाधिकारियों और सदस्यों में अच्छा उत्साह था। परिषद के अध्यक्ष अमित पुगलिया ने सभी रक्तदाताओं का आभार ज्ञापन किया। सभी रक्तदाताओं को अल्पाहार के पैकेट्स भी परिषद की ओर से उपलब्ध करवाए गए।

रक्तदान शिविर

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा वर्ष-२०२१-२२ कार्यकाल के शपथ दिवस के साथ तेयुप, सूरत एवं रामेश्वरम ग्रीन परिवार के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रथम रक्तदान शिविर का आयोजन रामेश्वरम ग्रीन, अलथान में आयोजित किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से इस महनीय उपक्रम का शुभारंभ हुआ।

तेयुप, सूरत उपाध्यक्ष महेश संकलेचा, ब्लड एवं प्लाज्मा डोनेशन प्रभारी सतीश संकलेचा ने अपना रक्तदान किया। रामेश्वरम ग्रीन परिवार एवं तेयुप, सूरत के संयुक्त तत्त्वावधान में कुल १५ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। इस शिविर में रामदीन काबरा, जिगर शाह, सुरेश संकलेचा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना ने सभी रक्तदाताओं, सहयोगियों एवं सिविल ब्लड बैंक का आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर में १७१ यूनिट रक्त संग्रह

वापी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा स्थानीय संस्थाओं-रोटरी क्लब ऑफ वापी वेस्ट, रोट्रेक्ट क्लब ऑफ वापी वेस्ट और जैन सोशल ग्रुप मैन के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन लायन्स ब्लड बैंक में किया। सभी संस्थाओं के अथक श्रम से १७१ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

वापी सभा अध्यक्ष संपत कोठारी, भूतपूर्व सभा अध्यक्ष रमेश कोठारी, अभातेयुप सदस्य संजय भंडारी व परामर्शदाता पीयूष कच्छारा से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। अध्यक्ष कुलदीप कोठारी, तेयुप उपाध्यक्ष व रक्तदान संयोजक जितेश वागरेचा, मंत्री विजय बोथरा आदि अनेक सदस्यों का शिविर में योगदान रहा। कार्यक्रम के आयोजन में तेयुप परामर्शदाता जिनेंद्र बोथरा का विशेष श्रम रहा।

आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव पर धम्म जागरण

विजयनगर।

आचार्य भिक्षु के २९६वाँ जन्मोत्सव पर रात्रि में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में धम्म जागरण के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर तेयुप द्वारा संचालित भजन मंडली विजय स्वर संगान के द्वारा सुंदर एवं मनभावक प्रस्तुतियाँ दी गई।

तेयुप से निवर्तमान अध्यक्ष पवन मांडोत, नव निर्वाचित अध्यक्ष अमित दक, सुमधुर गायक कलाकार अशोक कोठारी, सुशील पारख, देवांग बैद आदि एवं युवक परिषद की संपूर्ण टीम की उपस्थिति रही। सभा अध्यक्ष राजेश चावत एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सभा का शपथ ग्रहण समारोह

चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में जैन तेरापंथ पब्लिक स्कूल में तेरापंथी सभा, चेन्नई की नवगठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज का यह कार्यक्रम दायित्व बोध का कार्यक्रम है। कोई भी व्यक्ति जब भी अपने किसी भी काम में सफल होता है, उसका मुख्य कारण होता है समाज का हार्दिक सहयोग। समाज का सहयोग मिलता है, तो काम आगे बढ़ता है।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित एवं अनुशासित धर्मसंघ है। एक आचार्य की डोर में चलने वाला यह जैन शासन का विशिष्ट संघ है। निवर्तमान अध्यक्ष विमल चिप्पड़ ने अपनी टीम के साथ अच्छा काम किया है, समर्पित एवं कुशल कार्यशैली के संवाहक हैं। अब अध्यक्ष पद का दायित्व प्यारेलाल पितलिया के सक्षम हाथों में आया है। गुरु इंगित व साधु-साध्वियों की दृष्टि के अनुरूप संघ विकास एवं समाज विकास में अपने समय, श्रम एवं शक्ति का नियोजन करें। पूरी टीम के सहकार से नए पदचिह्न अंकित करें।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संघभक्ति, अनुरक्ति को अभिवृर्द्धित करने वाले गीत का संगान किया। निवर्तमान अध्यक्ष विमल चिप्पड़ ने अपने दो वर्षीय कार्यकाल में मिले सभी के सहयोग के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करने के साथ नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया एवं उनकी टीम को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

नव मनोनीत सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने सबको साथ लेकर काम करने की बात कहते हुए आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। अशोक खतंग ने नवमनोनीत सभा के पदाधिकारियों का परिचय काव्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया। जैन श्वेतांबर महासभा से ज्ञानचंद आंचलिया, धरमचंद लुंकड़, अमरचंद लुंकड़, तनसुख नाहर, देवराज आच्छा, ललित आंचलिया, तेयुप अध्यक्ष रमेश डागा, महिला मंडल उपाध्यक्षा पुष्पा हिरण, जैन महासभा से पन्नालाल सिंघवी ने अध्यक्ष एवं पूरी टीम को शुभकामनाएँ संप्रेषित की। मंगलाचरण हेमंत डूंगरवाल, महेंद्र सुराणा ने किया। मंच संचालन विमल बोहरा एवं आभार ज्ञापन मंत्री गजेंद्र खटेड़ ने किया।

संगठन के विधान के अनुपालन से...

(पृष्ठ १२ का शेष)

कोई बात है तो उचित जगह जाकर बता दो। बात में सार ही नहीं है और जगह-जगह जाकर माहौल खराब कर रहे हो। उसे समझाओ। नहीं माने तो फिर हमारे साथ तुम्हारा रहना मुश्किल है। समझाने पर भी न माने तो उसका संबंध विच्छेद कर दिया जाए तो कोई बुरी बात नहीं। शास्त्रकार ने जो संदेश दिया है, वह संगठन की स्वस्थता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

दीक्षा योग्य की हो, कोई अयोग्य समाविष्ट हो जाए तो उचितता से उसका संबंध विच्छेद कर देना चाहिए। आचार्य भिक्षु का भी यही संदेश है–

सगला रे, सगला साध न साध्वी रे,
रखज्यो हेत विशेष रे।
जिणतिण न रे, जिणतिण न मत मूंडज्योरे,
दीख्या देज्यो देख देख रे।।

चेला चाहिए, पर हर किसी को चेला मत बनाओ, परखकर बनाओ। जहाँ अयोग्य व्यक्ति आ जाते हैं, वहाँ कैसे क्या होगा?

संगठन के जो सदस्य हैं, उनमें विनयपूर्ण व्यवहार और कर्तव्यनिष्ठा का भाव होना चाहिए। हमारे दूसरे आचार्यश्री भारमल जी का २००वाँ महाप्रयाण दिवस संपन्नता का निकट माघ महीने में आ रहा है। शास्त्रकार ने संगठन की स्वस्थता के लिए संदेश दिया कि ऐसे प्रत्यनिक को विसांभोगिक बना दो, जो आज्ञा का अतिक्रमण करे।

पूज्यप्रवर ने माणक महिमा का विवेचन करते हुए पूज्य जयाचार्य और लाला लिछमण दास के मध्य बालक माणक की दीक्षा के संबंध में हुई चर्चा को फरमाया। तपस्या करने वालों को पूज्यप्रवर ने प्रत्याख्यान करवाए। किशोर मंडल को आशीर्वचन फरमाते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी के जीवन में किशोर अवस्था एक अर्जन की अवस्था होती है। ज्ञान अर्जन के साथ अच्छे संस्कार सृजन का वह समय हो सकता है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि हम मन से इंद्रियों की शक्ति बढ़ा सकते हैं। नासाग्र पर ध्यान करने से अनेक शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं।

अभातेयुप द्वारा १६वें राष्ट्रीय किशोर मंडल अधिवेशन की घोषणा की गई। किशोर मंडल के प्रभारी अर्पित नाहर एवं तेयुप, हैदराबाद अध्यक्ष संदीप चोरड़िया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कृत कर्मों के अनुसार होता है आयुष्य का बंध : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २८ जुलाई, २०२१

महामनीषी, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी सृष्टि में विभिन्न चीजें हैं। ठाणं आगम के आठवें अध्याय के १०८वें सूत्र में शास्त्रकार बता रहे हैं–पृथ्वियाँ आठ हैं–रत्न प्रभा, शर्करा प्रभा, बालुका प्रभा, पंक प्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, अधःसप्तमी (महातमः प्रभा) और ईषत् प्राग् भारा।

ये सात (प्रथम) तो नीचे है, आठवीं ऊपर है। इन आठों में प्रथम सात नरक की द्योतक है। ये नरकों के गौत्र हैं। सात ये पृथ्वियाँ हैं, नरक भी सात है, जहाँ नारकीय जीव रहते हैं।

हमारी सृष्टि में जीव है। जीव शुभ कर्मों का अर्जन भी करते हैं तो अशुभ कर्मों का अर्जन भी कर लेते हैं। जैसे कर्म होते हैं, उनके अनुसार अगली गति का आयुष्य बंध होता है। चार गतियाँ हैं–नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति, देव गति। मनुष्य मरकर के किसी भी गति में जा सकता है। मरकर मनुष्य मोक्ष में जा सकता है।

प्रश्न होता है–क्या नरक में इन चारों गतियों के जीव पैदा हो सकते हैं? चारों के नहीं हो सकते। नारकीय जीव जो नरक में है, वह पुनः मरकर नरक में पैदा नहीं हो सकता। देवगति के देव हैं, वे अपने आयुष्य की समाप्ति के बाद सीधे देव नहीं बन सकते और न ही नरक में पैदा हो सकते हैं। नारकीय भी देव गति में भी पैदा नहीं हो सकते। देव और नारकीय जीव सिर्फ मनुष्य या तिर्यंच में ही पैदा हो सकते हैं।

तिर्यंच और मनुष्य नरक गति में पैदा हो सकते हैं। हर कोई तिर्यंच, हर कोई नरक में जाकर पैदा नहीं हो सकता। हर कोई मनुष्य नरक में पैदा नहीं हो सकता। जो पैदा होने के लायक है, वो ही हो सकते हैं।

सात नरक हैं, उसमें कौन पैदा हो सकते हैं, उसका एक फार्मूला है। अ०भु०खे०ठ०ऊ०ठी०ज०म। कौन-कौन कहाँ पैदा हो सकता है। अ यानी असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय पहली नरक तक जा सकते हैं। उसके आगे पैदा नहीं हो सकते।

भु० यानी भुजंग परिसर्प तिर्यंच पंचेंद्रिय है, वे जीव दूसरी नरक तक पैदा हो सकते हैं। खेचर आकाश में उड़ने वाले पक्षी वे तीसरी नरक तक पैदा हो सकते हैं। ठ–थलचर वे चौथी नरक तक पैदा हो सकते हैं। ऊ–ऊरप रिसर्प पाँचवें नरक तक पैदा हो सकते हैं। ठी–यानी स्त्री, छठी नरक तक जा सकती है। आगे सातवीं में नहीं। ज–जलचर है, वो सातवीं नरक तक और म–मनुष्य भी सातवीं नरक तक पैदा हो सकते हैं। पुरुष मनुष्य सातवीं नरक तक जा सकते हैं। स्त्री-महिला छठी तक

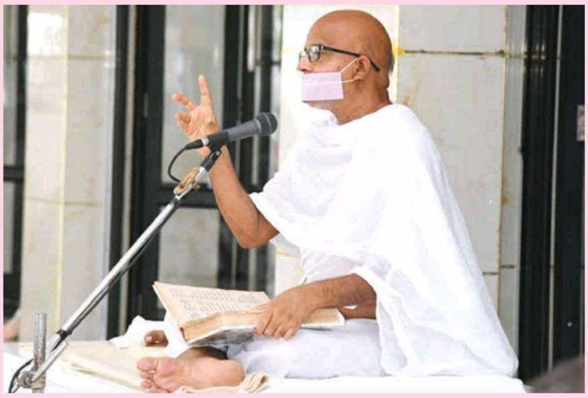

ही जा सकती है। तुलना करें तो ज्यादा पापी पुरुष हो सकता है। महिला नहीं। पुरुष ज्यादा पाप कर सकते हैं।

इसका दूसरा पहलू देखें कि जो कुछ साधना पुरुष कर सकता है, वो कुछ-कुछ साधना महिला नहीं कर सकती। धर्म की साधना पुरुष ही कर सकते हैं। अचेल साधना पुरुष ही कर सकते हैं।

नारकीय जीवन मिलता है, तो नरक तो मुख्यतया दुःख का ही स्थान है। पर कभी-कभी साता भी मिल सकती है। तीर्थंकरों के कल्याणकों के समय नारकीय जीवों को भी सुख की प्राप्ति हो सकती है।

चौबीसी का ग्रंथ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। यूँ तो स्तुति है, चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति के साथ बीच-बीच में तत्त्व ज्ञान भी है। जयाचार्य के पास जो तत्त्व ज्ञान था उसकी कुछ बूँदें बरसाने का प्रयास किया गया है।

सुर अनुत्तर विमान का सेवै के,
प्रश्न पुछ्या उत्तर जिन देवे रे।
अवधिज्ञान करि जाण लैवे रे,
प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे।।

तीर्थंकर और अनुत्तर विमान के देवों का कैसे संपर्क होता है, यह इसमें बताया गया है। इस तरह जयाचार्य का सूक्ष्म ज्ञान गीतों में मानो आ ही गया।

नारकीय जीव नरक आयुष्य वापस क्यों नहीं बाँध सकते? नरक के जीव इतने दुःखी होते हैं कि नए सिरे से इतना पाप का बंध नहीं कर सकते कि पुनः नरक में पैदा होना पड़े। इसी तरह देव है। देव अच्छे कर्म करके देवगति में गए हैं। वे वहाँ इतना पाप नहीं कर सकते कि सीधे नरक में आ जाएँ न वे देव गति में जा सकते हैं।

नरक गति के चार कारण बताए गए हैं–महा आरंभ, महा परिग्रह, पंचेंद्रिय वध और मांसाहार। इन कारणों से आदमी बचे। पाप हो जाए तो प्रायश्चित कर लें। हिंसा करके साथ में खुशी तो न मनाओ। रामायण के प्रसंग को समझाया कि भावों-भावों में अंतर है। रामचंद्रजी ने सहजता का परिचय दिया। हिंसा कर खुशी मनाने से और पाप बंध होगा। हिंसा करने से आदमी बचे।

पूज्यप्रवर ने माणक महिमा का वाचन किया। जयाचार्य का वि०सं० १९२८ के जयपुर चतुर्मास का प्रसंग प्रभावशाली ढंग से समझाया। माणकलाल (आचार्यश्री माणकगणी) के प्रारंभिक जीवन के बारे में फरमाया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने सिद्धों के गुणों के बारे में विस्तार से समझाया। सिद्धों में तो निर्मल चैतन्य होता है। वहाँ वर्ण, गंध, रस-स्पर्श कुछ नहीं होता है। न वेद है। जीव जब सिद्ध गति में पहुँचता है, तो पहले समय में ही ये गुण प्रकट हो जाते हैं।

मुनि प्रसन्न कुमार जी ने तपस्या करने की प्रेरणा दी। मुनि अतुलकुमार जी ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के चरणों में रखी।

शुभकरण चोरड़िया, दिनेश कांठेड, गणपत पितलिया, विमला, पारस देवी मेहता ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव पर धम्म जागरण

साउथ कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा प्रति माह की तरह सुदी तेरस पर भजन संध्या का तेरापंथ भवन में आयोजन किया गया। अच्छी संख्या में परिषद के सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन विशिष्ट अतिथि संदीप सेठिया ने किया। परिषद की भजन मंडली के गायक राजेश गोठी, संदीप सेठिया, प्रवीण सिरोहिया, रोहित दुगड़, राकेश नाहटा एवं हर्ष दुगड़ ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में कमल कोचर, मनोज दुगड़, अजय कोचर की उपस्थिति रही।

संपूर्ण दुनिया जीव-अजीव में समाहित है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २६ जुलाई, २०२१

ज्ञान प्रदाता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया दो तत्त्व वाली है। वे दो तत्त्व हैं–जीव और अजीव। जीव और अजीव के सिवाय इस दुनिया में और कुछ भी नहीं है। जो कुछ है–वह या तो जीव है या अजीव है। तीसरी कोई चीज नहीं है।

पच्चीस बोलों में २१वाँ बोल है–राशि दो–जीव राशि, अजीव राशि। अजीवों में वे चीजें हैं, जिनमें चैतन्य नहीं है। यहाँ शास्त्रकार ने जीवों की चर्चा की है कि जीव के दो ही प्रकार है।–सिद्ध और संसारी। और भी अनेक भेद हम कर सकते हैं। यहाँ शास्त्रकार ने जीवों को आठ भागों में विभाजित किया है। पहला प्रकार बताया है–नैयरिक। संसार में ऐसे जीव भी हैं, जो कष्ट की योनि में हैं। पापकर्म का उनको ऐसा फल मिलना होता है कि वो नरक गति में जाते हैं। नरक का एक नीरय है। नीरय में रहने वाले नैयरिक कहलाते हैं।

दूसरा प्रकार–तिर्यंच यौनिक, तीसरा तिर्यंच यौनिकी। ये तिर्यंच गति का विस्तार बता दिया गया। प्रश्न हो सकता है कि नरक गति वालों को एक प्रकार में ही लिया गया है, तिर्यंच वालों को दो भागों में क्यों लिया गया है। नरक में कोई जीव पुलिंग, स्त्रीलिंग नहीं होता, सारे के सारे नैयरिक नपुंसक लिंगी होते हैं। वहाँ सब एकाकार हैं।

तिर्यंच में पुरुषलिंगी, स्त्रीलिंगी और नपुंसक लिंगी भी होते हैं। तिर्यंच योनिकी में स्त्रीलिंगी समाविष्ट होते हैं पर तिर्यंच योनिक में पुरुष लिंगी और नपुंसक लिंगी दोनों समाविष्ट हो जाते हैं। तिर्यंचों में एकेंद्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक होते हैं। एकेंद्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय तक के जीव केवल नपुंसक लिंगी ही होते हैं। पंचेंद्रिय तिर्यंच में तीनों होते हैं।

पंचेंद्रिय तिर्यंच के भी दो भेद हैं–संज्ञी और असंज्ञी। जितने भी असन्नी अमनस्क, तिर्यंच पंचेंद्रिय हैं वे सारे के सारे नपुंसक लिंगी ही होते हैं। सिर्फ संज्ञी पंचेंद्रिय के ही तीन भेद होते हैं। नपुंसक लिंगी संज्ञी और असंज्ञी दोनों में हो सकता है। गुरुदेव तुलसी के समय का स्वयं के एक संस्मरण प्रसंग को समझाया।

चौथा भेद है, मनुष्य और पाँचवाँ भेद मानुषी। यहाँ पर भी वो ही बात है। मनुष्य भी दो प्रकार के होते हैं–संज्ञी मनुष्य और असंज्ञी मनुष्य। असंज्ञी मनुष्य तो नपुंसक लिंगी ही होते हैं। संज्ञी मनुष्य में तीनों होते हैं। पुरुष, स्त्री और नपुंसक।

छठा भेद है देव, सातवाँ भेद है देवी। नपुंसक लिंग न हो ऐसी एक मात्र देव गति है। देव गति में भी ये देवियाँ ज्यादा ऊपर नहीं होती हैं। भवनपति व्यंतर, ज्योतष्क और वैमानिक में सिर्फ पहले-दूसरे में ही देवियाँ होती हैं। वैमानिक देव लोक में तीसरे देवलोक से लेकर सर्वार्थ सिद्ध तक देवियाँ नहीं होती हैं। जाने को ऊपर चली जाएँ पर मूलतः वहाँ पैदा नहीं होती हैं।

ये सात भेद तो सांसारिक जीवों के हो गए। आठवाँ भेद किया गया है–सिद्ध। मोक्ष में जो सारे सिद्ध जीव हैं, उनमें तो कोई स्त्री, पुरुष या नपुंसक होता ही नहीं है। केवल शुद्ध आत्माएँ हैं, शरीर है ही नहीं। वहाँ सारे के सारे जीव वेदातीत-लिंगातीत होते हैं। नौवें गुणस्थान के बाद तो मनुष्य भी अवेदी हो जाता है। पर लिंग वहाँ होता है।

सिद्धों के १५ भेद उनके पूर्वावस्था के आधार पर हैं। सिद्ध अपने आपमें अभेद हैं, निरंजन हैं, निराकार हैं, वहाँ ये लिंग-भेद जैसे कोई भेद नहीं होता। सब एकाकार विराजमान होते हैं। सब ज्योतिर्मय हैं। यों कुल आठ भेद सर्व जीवों के हैं।

दूसरे प्रकार से भी जीवों को आठ प्रकार से बाँट दिया गया है–आभिनिबोधिक ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनः पर्यवज्ञानी, केवलज्ञानी, मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी, विभंग अज्ञानी। ये ज्ञान के आधार पर आठ भेद किए गए हैं।

केवलज्ञानी भेद में सारे सिद्ध आ जाएँगे। तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान वाले भी केवलज्ञानी भेद में आ जाएँगे। बाकी के जो सात भेद हैं, वो नितांत संसारी जीवों के होते हैं। केवलज्ञानी सिद्ध और संसारी होते हैं।

मुख्य नियोजिका जी ने उत्पाद व्यय और ध्रौव्य को विस्तार से समझाया। अनेकांत की व्याख्या भी इसी आधार पर हो रही है।

वर्तमान में पूज्यप्रवर की सन्निधि में दीक्षा पर्याय में सबसे वरिष्ठ मुनि हर्षलाल जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी सुषमा कुमारी जी ने तपस्या की प्रेरणा दी। साध्वी विमलप्रभा जी ने भी अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

भीलवाड़ा व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष उदयलाल सिंघवी, तेरापंथ समाज, भीलवाड़ा ने गीत से अपनी अभिव्यक्ति श्रीचरणों में रखी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया और समझाया कि सूई धागे में बँधी रहती है तो गुम नहीं होती है। हम भी ज्ञान के धागे से बंधे रहेंगे तो संसार में विनष्ट को प्राप्त नहीं हो सकेंगे।

✦ *व्यक्ति पुण्योदय के दिनों में भी प्रमाद में न जाए, जागरूक रहे, सत्ता, संपत्ति आदि का दुरुपयोग न करे।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

१६वें किशोर मंडल वर्चुअल अधिवेशन का शुभारंभ

संगठन के विधान के अनुपालन से मजबूत होता है संगठन : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३१ जुलाई, २०२१

जिन शासन प्रभावक, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि संगठन होता है, वहाँ उसमें सुव्यवस्था रहे, संगठन स्वस्थ रहे, संगठन दृढ़ भी रहे और संगठन विकास की दिशा में आगे बढ़े। ये बातें संगठन के लिए हितावह हो सकता है।

इसके लिए अपेक्षित है कि संविधान-मर्यादा सुनिर्मित हो और फिर मर्यादाओं के पालन के प्रति भी और अनुपालन करवाने के प्रति भी व्यवस्था रहे, जागरूकता रहे। संगठन में जो सदस्य होते हैं, वे संगठन के प्रति भी एक वांछनीय उचित निष्ठा का भाव रखें, सम्मान और विनय का भाव रखें। अनुशासन का उपयुक्त पालन हो, यह अपेक्षा होती है।

जहाँ संगठन के सदस्यों में उच्छृंखलता, अविनय भाव होना व जिस शाखा पर बैठा है, उसी को काटने का प्रयास अगर कोई करता है, तो वो फिर खुद कहाँ रहेगा? वह भी नीचे गिर जाएगा। संगठन के सदस्यों में अपने-अपने औचित्य के अनुसार विनयपूर्ण भाव और व्यवहार होना चाहिए।

ठाणं आगम के नौवें सूत्र में शास्त्रकार ने ऐसी ही बात बताई है कि नौ स्थानों से श्रमण-निर्ग्रन्थ सांभोगिक साधु को विसंभागिक करता हुआ आज्ञा का अतिक्रमण नहीं कर सकता। आचार्य का प्रत्यनीक, उपाध्याय का प्रत्यनीक, स्थविर का प्रत्यनिक, कुल का प्रत्यनिक, गण का प्रत्यनिक, संघ का प्रत्यनिक, ज्ञान का प्रत्यनिक, दर्शन का प्रत्यनिक, चारित्र का प्रत्यनिक ये नौ बातें बताई हैं कि जो साधुओं का संघ है, वहाँ बहुत से साधु हैं। अब कोई साधु कर्तव्य के प्रतिकूल आचरण-व्यवहार करता है, उसे समझाने का प्रयास होना चाहिए।

प्रयास कर लिया यदि वो ठीक नहीं हो रहा है, तो क्या करना चाहिए? इस संदर्भ में शास्त्रकार ने कहा है कि ऐसी स्थिति में जो सधार्मिक है, सांभोगिक है, उसको विसांभोगिक भी किया जाए तो कोई आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता। संबंध विच्छेद भी कर दिया जाता है।

ऐसा करने के पीछे दो बातें हो सकती हैं। पहली बात है—जो साधु उचित आचार-व्यवहार का पालन ही नहीं करता है, क्या वह उस संप्रदाय का सदस्य भी रहने लायक है? अयोग्य को कब तक संगठन में रखा जाए। दूसरी बात है कि एक व्यक्ति अयोग्यतापूर्ण कार्य करता है, उसको मौका देकर सुधारा जाए, अवसर दिया जाए। सब कुछ करने के बाद भी सुधार नहीं है, तो फिर विसांभोगिक करने की बात है।

एक व्यक्ति यूँ प्रतिकूल आचरण करता है, उस पर कोई कार्यवाही नहीं है, तो दूसरों का भी हौसला बढ़ेगा कि करते जाओ, यहाँ कहने वाला कोई नहीं है। उसके कारण दूसरे भी बिगड़ सकते हैं, इसलिए उसको विसांभोगिक कर दिया जाए। यह एक घटना से समझाया कि आगे न फैले इसलिए ऑपरेशन करने की अपेक्षा होती है। सड़े हुए पान को बाहर निकाल दो तो और पान सड़ेंगे नहीं।

जैसे कोई साधु आचार्य के प्रत्यनिक हो गया, आचार्य के प्रति अवांछनीय व्यवहार करता है तो फिर दूसरे भी करेंगे, संगठन को खतरा हो सकता है। वो समझाने पर भी नहीं समझ रहा है, तो उसे विसांभोगिक कर दो। इसी तरह अन्य के प्रति ऐसा व्यवहार बन जाए, आधारहीन बातें बोलना, अवगुण बोलना, निंदा करना होता है, तो उसे गण से अलग कर दो।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**